हिंदी यू.एस.ए की त्रैमासिक ई-पत्रिका

कर्मभूमि

रामायण विशेषांक

वर्ष ३, अंक १०

सितम्बर २०१०

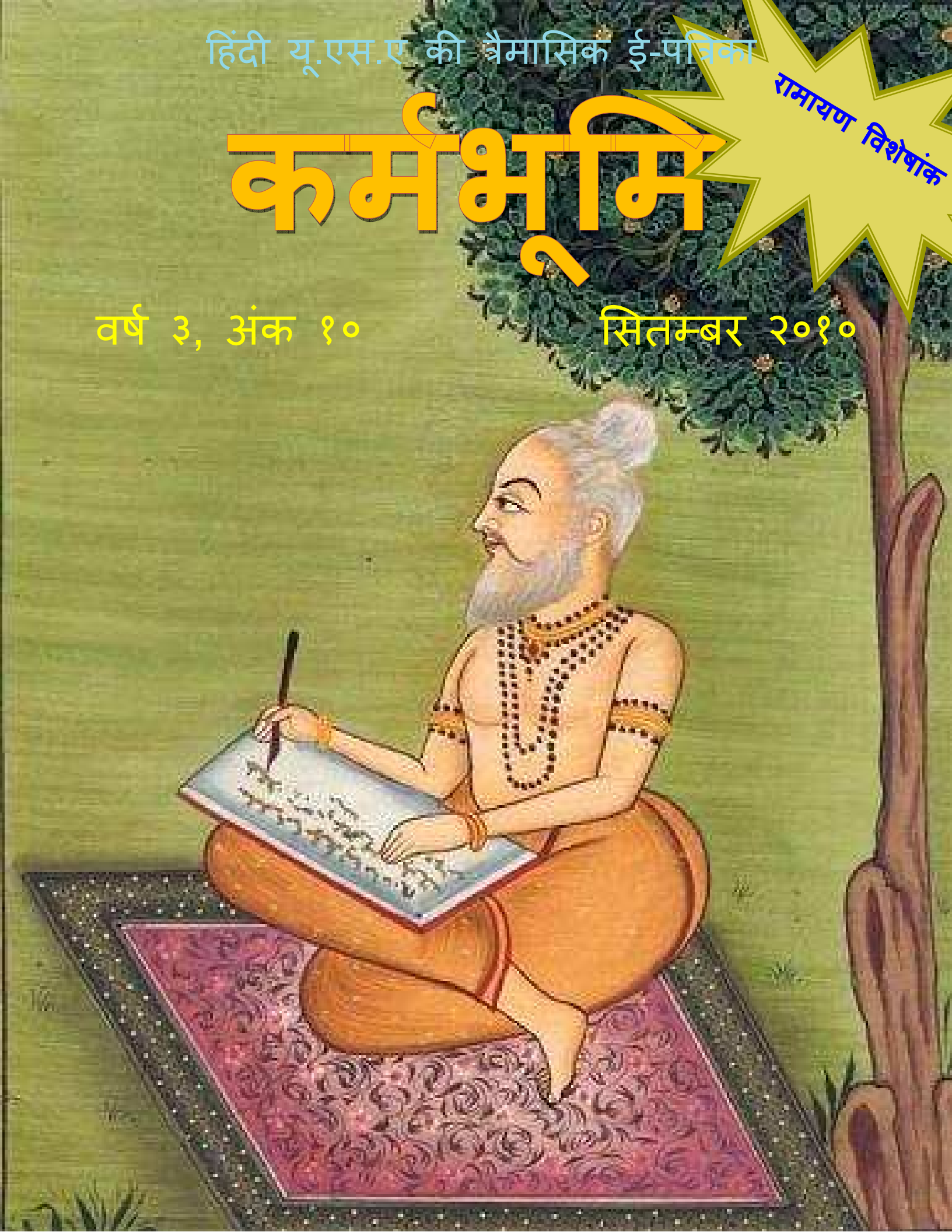

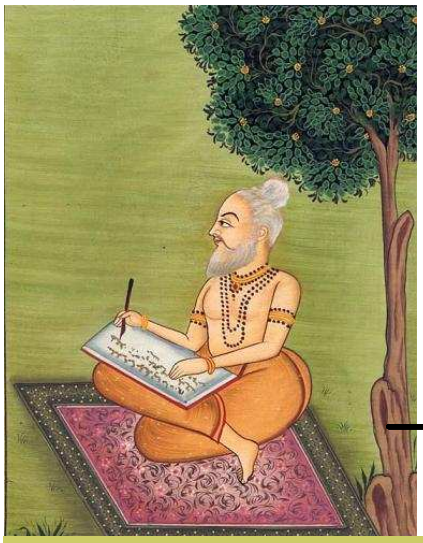

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

कर्मभूमि त्रैमासिक ई-पत्रिका के रामायण विशेषांक में आपका हार्दिक स्वागत है। यह आपकी अपनी पत्रिका है, इसे मनोरंजक और ज्ञानवर्धक बनाने के लिए इसी प्रकार लेख, कविताएँ तथा अपने अनुभव भेजते रहिये।

इस अंक में बहुत से लेख कक्षा ७ से १० तक के छात्रों द्वारा लिखे गए हैं, इससे स्पष्ट होता है कि हमारी आने वाली पीढ़ी में भी यह ग्रंथ बहुत लोकप्रिय है। आस्था सैनी का "रामायण ने विश्व को सिखा दिया" और उर्वी सैनी का "रामायण से मिले आदर्श" लेख हिन्दी कक्षा में पढ़ने वाली २ छात्राओं द्वारा लिखे गए हैं, जिनमें दोनों बच्चियों ने अति सुन्दर ढंग से रामायण के विभिन्न पात्रों के जीवन से प्राप्त होने वाली शिक्षा के विषय में समझाया है।

रचिता सिंह जी का लेख "रामायण में ऐसा क्या है?" पढ़कर हमें धार्मिक शब्द के सही अर्थ का ज्ञान होता है। सुधा अग्रवाल जी द्वारा लिखित "रामायण से कुछ प्रश्न" अवश्य पढ़िए व अपने को जाँचिए क्या आपको सभी प्रश्नों के उत्तर आते हैं? देवेन्द्र जी द्वारा लिखित "त्याग की आवश्यकता" पढ़ने के बाद त्याग का दैनिक जीवन में क्या महत्व है? स्पष्ट हो जाएगा। एक छोटे बच्चे द्वारा रामायण के एक दृश्य को चित्रित किया गया है। इसके अतिरिक्त स्वयंसेवकों की पिकनिक रिपोर्ट, एडिसन हिन्दी पाठशाला की अमेरिकन छात्रा का अनुभव व छात्रा से स्वयंसेवी बनने की यात्रा का वर्णन इस अंक को और भी मजबूत बनाता है।

हिन्दी यू.एस.ए. का उद्देश्य सदैव बच्चों को हिन्दी सीखने, बोलने और लिखने के लिए प्रेरित करना है, इसी उद्देश्य को केन्द्रित करते हुए "कर्मभूमि" पत्रिका की रचना का विचार किया गया। कर्मभूमि का उद्देश्य हिन्दी व अहिन्दी भाषी लोगों को हिन्दी पढ़ने व लिखने के लिए प्रोत्साहित करना है। बहुत से लोग हिन्दी पढ़ व बोल लेते हैं, परंतु लेख नहीं लिख पाते, हमारा उद्देश्य उन्हें प्रेरित करना है, ताकि लिखने के प्रति भी उनकी रुचि बढ़े।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि, यह अंक आपको अवश्य पसन्द आएगा। कृपया इसे आगे बढ़ाने में सहयोग दें तथा अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाऐं।

धन्यवाद,

कर्मभूमि

लेख–सूची

४ - नवम् हिन्दी महोत्सव

९ - नवम् हिन्दी महोत्सव – कुछ झलकियाँ

१३ - त्याग की आवश्यकता

१४ - रामकथा-सम्बन्धी शोध

१६ - जीवन के आदर्शों का प्रतिबिम्ब - रामायण

१९ - एक श्लोकी रामायण

२० - रामायण में ऐसा क्या है?

२२ - हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

२५ - सुन्दरकाण्ड का अर्थ

२८ - राम नाम की महिमा

३० - रामायण के प्रश्न

३७ - माँ सरस्वती का वरदान

३८ - सीता हरण – चित्रकला

३९ - रामायण ने विश्व को सिखा दिया

४१ - रामायण से मिले आदर्श

४२ - मेरा अनुभव

४३ - एक विद्यार्थी से स्वयं-सेवक बनने की प्रेरणा

४५ - चटपट बनाओ झटपट खाओ

४८ - हिन्दी यू.एस.ए. की पिकनिक - २०१०

४९ - साउथ ब्रुंस्विक हिन्दी पाठशाला की पिकनिक - २०१०

५० - एक और दीवाली

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

सम्पादक

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

देवेंद्र सिंह

माणक काबरा

अर्चना कुमार

राज मित्तल

रामायण विशेषांक

आपकी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

HindiUSA

3 Quay Circle

Sewell NJ-08080

नवम् हिन्दी महोत्सव

हिन्दी यू.एस.ए. ने नौवाँ हिंदी महोत्सव इस वर्ष १ और २ मई को फ्रेंक्लिन हाई स्कूल में बहुत धूमधाम से मनाया| प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी इसमें हिंदी यू.एस.ए. की पाठशालाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों ने अपने हिंदी ज्ञान तथा कौशल का विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा प्रदर्शन किया|

नौवें हिंदी महोत्सव में १५०० विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया

हिंदी यू.एस.ए. ने हिंदी महोत्सव कार्यक्रम का प्रारंभ सन् २००२ में किया था| और तब से लेकर अब तक इसमें प्रतिवर्ष भाग लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या बहुत तीव्र गति से बढ़ रही है| प्रथम हिंदी महोत्सव में १०० विद्यार्थियों ने भाग लिया था, तथा प्रारंभ के कुछ वर्षों में यह एक दिवसीय कार्यक्रम था| किंतु छठवें हिंदी महोत्सव से इसे द्विदिवसीय करने की आवश्यकता को अनुभव किया गया, तथा विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या तथा कार्यक्रम की लोकप्रियता को देखते हुए सातवें हिंदी महोत्सव से इसे द्विदिवसीय कर दिया गया|

नौवें हिंदी महोत्सव में १५०० विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया| इन विद्यार्थियों की उम्र ५ वर्ष से लेकर १७ वर्ष के बीच थी| यह कार्यक्रम दोनों दिन प्रात: ११ बजे प्रारंभ होकर रात्रि १० बजे तक चला|

प्रथम दिवस - १ मई की सुबह फ्रेंक्लिन हाई स्कूल के प्रांगण में चहल-पहल को देखा जा सकता था| हिन्दी यू.एस.ए. के सक्रिय कार्यकर्ता अपनी बसंती रंग की वेषभूषा में यहाँ से वहाँ विभिन्न व्यवस्थाओं तथा सजावट में व्यस्त थे| थोड़ी ही देर में कुछ व्यवसायी लोगों ने आकर अपने-अपने स्टॉल सजाने प्रारंभ कर दिए| द्वार के पास की एक मेज पर कार्यक्रम की पत्रिका “कर्मभूमि” जो कि हिन्दी यू.एस.ए. की त्रैमासिक पत्रिका है, बड़ी अधीरता से दर्शकों, अतिथियों तथा कार्यक्रम में भाग लेने वाले नन्हे-मुन्ने बच्चों की प्रतीक्षा में आँखें बिछाए हुए प्रतीक्षारत थी| कार्यक्रम की रूपरेखा के पत्र भी साथ ही रखे हुए थे|

१०:३० बजे से विद्यार्थियों तथा अभिभावकों का आगमन प्रारंभ हो गया| सभी विद्यार्थी भोजनालय में एकत्र होकर अपने कार्यक्रम के अनुरूप सजने संवरने लगे| कुछ ने तो अपना अभ्यास भी प्रारंभ कर दिया था| भोजकक्ष की चहल-पहल देखते ही बनती थी| सभी शिक्षिकाएँ तथा निर्देशिकाएँ अपने-अपने दल के साथ व्यस्त थीं| सब में प्रतियोगिताओं को जीतने की होड़ लगी थी| इस समय भारत से हजारों मील दूर अमेरिका के न्यू जर्सी में हिंदी का जो वातावरण था, वह आजकल भारत में ढूँढने से भी नहीं मिलता|

ठीक ११ बजे मंच से शंख के बजने की ध्वनि वातावरण में तैर गई| भारतवंशियों की आने वाली पीढ़ी, जिसके हाथ में हिंदी की मशाल है, के नन्हे-मुन्ने कुछ बच्चों द्वारा दीप प्रज्जवलन किया गया, तथा

नवम् हिन्दी महोत्सव

सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ| पहली सामूहिक प्रतियोगिता विषय वस्तु प्रतियोगिता थी, जिसमें ५ से ६ वर्ष के २४ शिक्षार्थियों ने भाग लिया| इस प्रतियोगिता में बच्चों ने रंगों के नाम, जानवरों तथा पक्षियों के नाम, फलों तथा सब्जियों के नाम, पारिवारिक संबंधों के नाम, गिनती तथा अक्षर ज्ञान पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए| इसमें नाटक, गीत, अभिनय गीत आदि सभी शामिल थे|

प्रथम प्रतियोगिता के निर्णायकगणों ने भी अपना स्थान ग्रहण कर लिया था| मंच के पीछे लगभग १० कार्यकर्ता पूरी चुस्ती के साथ बच्चों को क्रमबद्ध कर रहे थे| उनकी चुस्ती का परिणाम यह हुआ कि यह प्रतियोगिता अपने निर्धारित समय से कुछ पहले ही समाप्त हो गई| जब तक प्रतियोगिता के परिणाम घोषित होते तब तक हिंदी यू.एस.ए. की वरिष्ठ स्वयंसेविका श्रीमती रचिता सिंह ने अभिभावकों को धन्यवाद देते हुए उनके प्रयास और सहयोग की भूरी-भूरी प्रशंसा की, तथा अभिभावकों को आगे भी हिंदी सिखाने के लिए प्रेरित किया|

सभी संगीत शिक्षक तथा गायक जो इस प्रतियोगिता के निर्णायक थे उन्होंने बच्चों की प्रतिभा को देख कर दाँतों तले उँगली दबा ली|

इस समय तक दूसरी प्रतियोगिता के दर्शकों द्वारा कक्ष खचाखच भर चुका था, क्योंकि अगली प्रतियोगिता प्रथमा -१ स्तर के विद्यार्थियों की सामूहिक भजन प्रतियोगिता थी| इस प्रतियोगिता में ३८६ विद्यार्थियों ने भाग लिया| प्रथम प्रतियोगिता के परिणाम घोषित कर दिए गए थे, तथा विजेताओं को पुरुस्कार देकर दूसरी प्रतियोगिता निर्धारित समय पर प्रारंभ हो गई| सभी प्रतियोगियों ने एक से बढ़ कर एक भजन प्रस्तुत किए| निर्णायक गण इन बच्चों के शुद्ध उच्चारण, राग तथा सुर-ताल को सुनकर आश्चर्यचकित थे| इस प्रतियोगिता का निर्णय बहुत ही कठिन रहा|

तृतीय प्रतियोगिता "देशभक्ति के गीत प्रतियोगिता" थी जिसमें प्रथमा-२ स्तर के बच्चों ने भाग लिया| इनकी संख्या लगभग ३०० थी| सभी संगीत शिक्षक तथा गायक जो इस प्रतियोगिता के निर्णायक थे, उन्होंने बच्चों की प्रतिभा को देख कर दाँतों तले उँगली दबा ली| इस प्रतियोगिता के बाद सभी निर्णायकों को मंच पर आमंत्रित किया गया तथा उनका परिचय दर्शकों से करवाते हुए उन्हें हिंदी यू.एस.ए. के पहचान चिन्ह मुद्रित उपहार प्रदान किए गए|

अब चतुर्थ प्रतियोगिता प्रारंभ हुई जो कि सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता थी| इसमें मध्यमा-१ तथा २ के विद्यार्थियों ने पूरे जोश के साथ भाग लिया| इसमें लगभग २४२ बच्चों ने भाग लेकर भरतनाट्यम, कत्थक, तथा विभिन्न प्रकार के लोक नृत्य प्रस्तुत किए| सभी नृत्य अपना विशेष स्थान रखते हुए प्रस्तुती तथा वेशभूषा के लिए सराहे गए, किंतु इन सबमें विशेष सराहना और प्रथम स्थान प्राप्त किया भाँगड़ा नृत्य ने|

नवम् हिन्दी महोत्सव

नृत्य प्रतियोगिता के बाद श्री देवेंद्र सिंह जी ने जो हिंदी यू.एस.ए. के संस्थापक हैं, ने सभी अभिभावकों को अपने ओजपूर्ण उद्‌बोधन से भविष्य में हिंदी भवन के निर्माण में सहयोग देने का आग्रह किया| तत्पश्चात प्रतियोगिता के सभी निर्णायकों का परिचय दिया गया, तथा उन्हें सम्मानित किया गया|

घड़ी के काँटे तेजी से घूम रहे थे, किंतु स्वयंसेवकों की चुस्ती में कोई कमी नहीं आई थी| अब अंतिम प्रतियोगिता, जोकि नाटक एवं एकांकी प्रतियोगिता थी, के प्रारंभ होने का समय आ गया था| यह सबसे कठिन और दिलचस्प प्रतियोगिता थी| इस प्रतियोगिता में मुख्यत: उच्च स्तर के बच्चों ने भाग लिया| कुछ एकांकियों में सभी स्तर के मिले-जुले विद्‌यार्थी थे| दिल को छू लेने वाले एकांकी थे, “बच्चों के मुख से हिंदी”, “चाचा ने तस्वीर टाँगी (हास्य)”, “स्वतंत्रता एक झलकी”, “भारत के स्वाभिमान”, “हिन्दी हड़िप्पा”, तथा “हँसी के गुदगुदे”, आदि| भारत के स्वाभिमान का मंचन अद्‌वितीय था| सभी एकांकी शिक्षकों ने स्वयं लिखे तथा निर्देशित किए थे| उन सबकी मेहनत को दर्शक अनुभव कर रहे थे| उनका हिन्दी प्रेम तथा बच्चों को हिंदी सिखाने की लालसा उनके संवादों में स्पष्ट झलक रही थी| पुरुस्कार वितरण के बाद प्रीति भोज रात्रि १० बजे तक चलता रहा|

इस प्रकार महोत्सव का पहला दिन जो हिन्दी यू.एस.ए. ने आने वाली पीढ़ी के नाम लिखा था, समाप्त हो चुका था| किंतु यह प्रयास अपने पीछे इतिहास में कुछ ऐसे अविस्मरणीय क्षण और बातें छोड़ गया जो आने वाली पीढ़ी के लिए एक उदाहरण होंगे| हिंदी यू.एस.ए. के ३०० कार्यकर्ता, शिक्षकगण, तथा पाठशाला संचालक सभी नमन करने योग्य हैं| इन सबके सामूहिक तथा सामंजस्यपूर्ण प्रयास का परिणाम यह था कि १,५०० बच्चों वाला कार्यक्रम जिसमें प्रतियोगिताएँ, पुरुस्कार वितरण, संबोधन, सम्मान, तथा धन्यवाद भाषण भी शामिल थे, समय से पूर्व ही समाप्त हो गया| इसे संसार का आठवाँ आश्चर्य कहें तो गलत न होगा|

द्‌वितीय दिवस - २ मई को पुन: प्रात: ९ बजे से ही सभी कर्मठ कार्यकर्ता फ़्रेन्क्लिन हाई स्कूल के प्रागंण में एक नई ताजगी और उत्साह के साथ सजावट तथा अन्य तैयारियों में लग गए| उनके चेहरों पर पूर्व दिवस की थकान का लेशमात्र भी चिन्ह नहीं था| पुस्तक स्टाल की १२ मेजें अपने बसंती रंग में रंगी रंग-बिरंगी पुस्तकों से सजी थीं| हिन्दी यू.एस.ए. पिछले ९ वर्षों से हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए हिन्दी साहित्य की पुस्तकों को बहुत ही कम मूल्य में पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास कर रहा है| इसमें सभी प्रकार की पुस्तकों का समावेश है, विशेषकर बाल साहित्य का| श्रीमती रत्ना पाराशर जी ने अन्य कार्यकर्ताओं की सहायता से दोनों दिन स्टॉल का उत्तरदायित्व संभाला|

नवम् हिन्दी महोत्सव

समय बहुत तेजी से भाग रहा था| सुबह १० बजे से ही कनैक्टिकट, न्यू यॉर्क, डेलावेयर, पैंसिल्वेनिया, तथा न्यू जर्सी के विद्यार्थी जो पहली दो प्रतियोगिताओं को जीतते हुए इस स्थान पर पहुँचे थे, शनै: शनै: एकत्रित होने लगे| शंखनाद, दीप प्रज्जवलन, तथा सरस्वती वंदना के बाद ठीक ११ बजे कनिष्ठा -१ के विद्यार्थियों की प्रतियोगिता प्रारंभ हुई जो अनवरत २ बजे तक चलती रही|

इस प्रतियोगिता में ८ स्तरों के लगभग १०० चुने हुए प्रतियोगियों ने भाग लिया| इस प्रतियोगिता की संयोजिका थीं श्रीमती अर्चना कुमार जी, तथा कविता पाठ का संचालन किया था विशिष्ठ स्तर के विद्यार्थियों ने| अनुमान है कि यह हिंदी की सबसे लोकप्रिय प्रतियोगिता रही जो १,२०० विद्यार्थियों से प्रारंभ होकर ५० विजेता विद्यार्थियों पर समाप्त हुई| इस प्रतियोगिता का उद्देश्य हिन्दी काव्य के प्रति बच्चों में प्रेम जागृत करना, उनमें नेतृत्व की भावना पैदा करना, खिलाड़ी भावना दृढ़ करना, तथा उनके हिंदी उच्चारण और स्मरण शक्ति को बढ़ाना है|

निर्णायकों के सम्मान तथा पुरुस्कार वितरण के बाद विशिष्ठ स्तर के विद्यार्थी जो पिछले ६ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. में अध्ययन कर रहे हैं, का दीक्षांत समारोह किया गया, जोकि कार्यक्रम के मुख्य अध्यक्ष श्री ब्रह्म रतन अग्रवाल जी के हाथों सम्पन्न हुआ| श्री अग्रवाल जी ने हिन्दी यू.एस.ए. के प्रयास की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए अभिभावकों को हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के संबंध के बारे में बताया|

अब बारी थी, एक ऐसी प्रतियोगिता की जिसके लिए विशेष रूप से विश्वविद्यालय के हिंदी शिक्षकों को निर्णायक बनाकर बुलाया गया था| सभागार में लोग बेचैनी से इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे| यह प्रतियोगिता थी हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता, और इसके संयोजक थे वरिष्ठ शिक्षक एवं स्वयंसेवक श्री सुशील अग्रवाल जी| यह प्रतियोगिता विशिष्ठ स्तर के विद्यार्थियों के बीच थी|

मंच पर ६ पाठशालाओं के नाम के पट लगे हुए थे, तथा इन पटों के पीछे ५-५ कुर्सियाँ रखी हुई थीं| बीच में सफ़ेद पर्दा था जिस पर प्रोजेक्टर से प्रश्न दिखाए जाने थे, तथा ३-३ टीमें इस पर्दे के दोनों ओर बैठी थीं| इस प्रतियोगिता में अपठित गद्यांश, टंगट्विस्टर, प्रश्नोत्तर, शब्द ज्ञान, तथा हिंदी प्रतिभा के प्रश्न सम्मिलित किए गए थे| सभी टीमों ने बहुत सुंदर प्रदर्शन किया, तथा अपने हिंदी ज्ञान से दर्शकों को आश्चर्यचकित किया| इस प्रतियोगिता के पुरुस्कार वितरण के बाद मानो कक्ष में हलचल सी मच गई| यह हलचल कवि सम्मेलन के प्रारंभ होने की हलचल थी| प्रत्येक श्रोता आगे से आगे बैठकर कवि सम्मेलन का पूरा-पूरा आनंद लेना चाहता था| आनंद ले भी क्यों न? हिंदी यू.एस.ए. ने ऐसे प्रसिद्ध और जनता को बाँधने वाले कवि बुलाए

नवम् हिन्दी महोत्सव

थे कि हर कोई अपनी कुर्सी से चिपक जाना चाहता था|

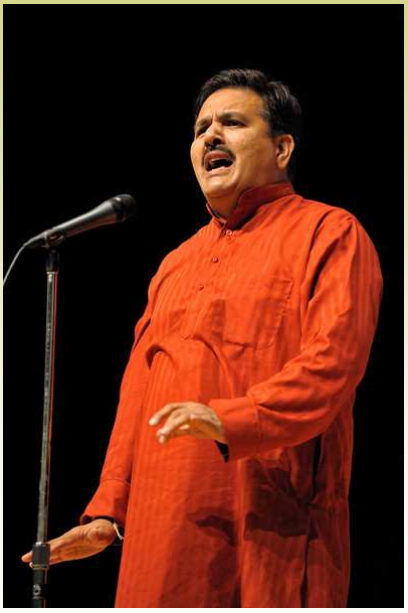

कवि सम्मेलन के आयोजक श्री देवेंद्र सिंह जी ने तीनों कवियों का शानदार परिचय दिया, तथा उन्हें एक-एक कर मंच पर आमंत्रित किया| हिन्दी यू.एस.ए. के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री राज मित्तल जी, श्री माणक काबरा जी, तथा श्री सुशील अग्रवाल जी ने कवियों का पुष्पों द्वारा स्वागत किया|

पहले आसन पर थे हरियाणा के हास्य कवि श्री जगबीर राठी जी, तथा दूसरे आसन पर थे उत्तरप्रदेश के डॉ. कुमार विश्वास जी, तथा तीसरे आसन पर थे राजस्थान के वीर रस के वरिष्ठ कवि श्री बलबीर सिंह करुण जी| तीनों कवियों ने हास्य और वीर रस में श्रोताओं को ऐसा डुबाया कि कब ४ घंटे बीते पता ही नहीं चला| सभा कक्ष ठहाकों और तालियों से समय-समय पर गूँजता रहा| न चाहते हुए भी समय की सीमा के कारण कवि सम्मेलन का समापन करना पड़ा|

अंत में सभी कवियों को हिंदी यू.एस.ए. के स्मृति चिन्ह धन्यवाद स्वरूप प्रदान किए गए, तथा सभी शिक्षिकाओं और स्वयंसेवकों को हिंदी यू.एस.ए. के द्वारा उपहार दिए गए|

इस प्रकार हिन्दी महोत्सव के दो शानदार दिन समाप्त हुए|

नवम् हिन्दी महोत्सव – कुछ झलकियाँ

नवम् हिन्दी महोत्सव – कुछ झलकियाँ

नवम् हिन्दी महोत्सव – कुछ झलकियाँ

नवम् हिन्दी महोत्सव – कुछ झलकियाँ

त्याग की आवश्यकता

देवेंद्र सिंह

सारा विश्व त्याग और बलिदान की नींव पर खड़ा है। यदि माँ अपने समय, शक्ति, ऊर्जा, और नींद का त्याग न करे, तो विश्व की सभ्यता नहीं पनप सकती। यदि वैज्ञानिक भूख-प्यास और अपने "वीकएंड" का त्याग न करे, तो वह शायद अविष्कार न कर पाए, जिसके लिए समय की प्रचुर मात्रा में आवश्यकता पड़ती है, और सुई की नोक जैसी एकाग्रता अनिवार्य है। भारत वर्ष को विश्व का एक महत्वपूर्ण राष्ट्र बनाने में सैंकड़ों स्वतंत्रता सेनानियों, राजनीतिज्ञों, और देशभक्तों का बलिदान सम्मिलित है।

आधुनिक मनुष्य त्याग और बलिदान की भावना से उतना ओत-प्रोत नहीं है, जितना हमारे पूर्वज थे। प्रौद्योगिकी विकास ने हमें समय की बहुलता प्रदान की है, और हमारे रहन-सहन को सुधारा है। परंतु उस अतिरिक्त समय को हमने अपने भोग-विलास को तृप्त करने में लगाया है, न कि समाज के लिए अपना कुछ त्याग करके उसे अपनी संतति के लिए एक आदर्श दर्जा देने की चेष्टा करने में। मनुष्य समाज और प्रकृति से जितना ले रहा है उतना वापिस नहीं कर रहा। व्यक्तिगत और सामूहिक त्याग का अभाव होने के कारण राम, सीता, कृष्ण, और सावित्री जैसे विशेष चरित्र वाले व्यक्ति पैदा नहीं हो रहे, और समाज में नैतिक मूल्यों का महत्व कम हो गया है।

हम सभी रामायण ग्रंथ के पात्रों को जानते हैं, और राम, सीता, भरत, लक्ष्मण, हनुमान, जैसे अनेक ऐतिहासिक लोगों के त्याग से भली-भाँति परिचित हैं। इन लोगों ने धर्म की रक्षा करने के लिए अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया था। अयोध्या-वासियों में भी त्याग की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। कदाचित बहुत से लोग यह नहीं जानते होंगे कि राम और भरत के साथ उनकी प्रजा ने भी १४ वर्षों तक सात्विक व त्यागपूर्ण जीवन जीने का व्रत लिया था, और इन १४ वर्षों में अयोध्या के किसी भी आँगन में बच्चे की किलकारी नहीं गूँजी थी। इस तरह के त्याग का उदाहरण शायद ही विश्व में और कहीं मिले। राजा के साथ-साथ प्रजा भी पूरी तरह से त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति थी।

आज कल के वातावरण में जहाँ मनुष्य एक दूसरे को हरा कर आगे बढ़ने की चेष्टा में लगा है, त्याग की भावना सिखाना बहुत की कठिन कार्य है। पाठशालाओं के पाठ्यक्रम में भी त्याग की शिक्षा का समागम नहीं है। इसलिए माता-पिता को अपने बच्चों को त्याग और बलिदान की महत्ता सिखाना बहुत ही आवश्यक है। इसके लिए सबसे पहले हमें खुद अपने आप को त्याग की भावना से अभीभूत करना होगा। माता-पिता का चाल-चलन, चरित्र, और त्याग के उदाहरण ही बच्चों को त्याग के गौरव से अवगत करा सकते हैं। यदि हमने किसी अभियान या व्यक्ति के लिए कभी त्याग नहीं किया, तो हमें इसका अभ्यास करना पड़ेगा। टेलीविजन देखने का त्याग, दो घंटे कम सोकर निद्रा का त्याग, मदिरा का त्याग इत्यादि ऐसे त्याग हैं जिनसे विशेषकर हमारा व्यक्तिगत लाभ होगा। जब हमें त्याग करने का अभ्यास हो जाएगा, तो हम समाज के उत्थान के लिए बड़े त्याग करने में सक्षम होंगे। इससे अच्छी शिक्षा हम अपने बच्चों को नहीं दे सकते।

डा. मृदुला प्रसाद

जन्म : राँची, झारखंड शिक्षा : पी एच डी . (हिन्दी)

व्यवसाय : आर एल एस कालेज , राँची में हिन्दी की व्याख्याता। विभिन्न पत्रिकाओं में समीक्षात्मक एवं शोधपरक लेख प्रकाशित। एक पुस्तक "अज्ञेय की कहानियों का वस्तुशिल्प" प्रकाशनाधीन।

रामकथा-सम्बन्धी शोध

रामकथा पर सबसे वृहद और प्रामाणिक काम फ़ादर कामिल बुल्के का है| रामायण की कथा देश-काल के साथ साथ परिवर्तित होती रही है और उनके शोध के अनुसार इसके कुछ तीन सौ रूपान्तर उपलब्ध हैं।

भारत आने से पहले ही कामिल बुल्के ने तुलसी की पंक्तियाँ- "जनम सफ़ल जगती तल तासू। पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू॥" का जर्मन अनुवाद पढ़ा था। बाद में, भारत आने पर, जिस कवि ने फ़ादर बुल्के को अभिभूत किया वह तुलसीदास थे। उनकी विश्वप्रसिद्ध पुस्तक "रामकथा:उत्पत्ति और विकास "(१९५०) उनका शोधप्रबंध है जिसने पुस्तक का आकार ग्रहण करने के बाद उन्हें दुनियाभर में प्रसिद्दि दिलाई। इस पुस्तक में रामकथा के इतिहास और स्वरुप -सम्बन्धी प्रचलित मतवादों, रामकथा की परम्पराओं, इसके अन्तर्राष्ट्रीय प्रसार और प्रभाव का पहली बार उद्घाटन किया गया है।

राम कथा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लेखक का विचार है कि प्राचीन काल से ही राम की कथा मौखिक और लिखित दोनों रूपों में प्रचलित थी। वैदिक साहित्य में राम नामक एक राजा की चर्चा है इसी प्रकार 'दशरथ जातक', 'महाभारत' और बौद्ध ग्रंथों में भी रामकथा का बार-बार उल्लेख हुआ है| परन्तु, वाल्मीकि ने प्रचलित रामकथा को सुसंबद्ध काव्य का रूप प्रदान किया।

भारत के विभिन्न भागों के अतिरिक्त अन्य देशों में भी रामकथा की विभिन्न परम्पराओं से सम्बंधित शोध कार्य ही फादर बुके की उपलब्धि है। उन्होंने अपनी पुस्तक में रामकथा की वाल्मीकिय, बौद्ध, जैन, तिब्बती, खोतानी और दक्षिण एशियाई परम्पराओं पर विचार किया है। इनमें बौद्ध और जैन परम्पराएँ, वाल्मीकिय परम्पराओं की तरह भारतीय हैं। इस परंपरा की व्यापकता संस्कृत से लेकर आधुनिक भारतीय भाषाओं तक देखी जा सकती है। फादर बुल्के के शोध के अनुसार संस्कृत की रामकथा में रामावतार की भावना ईसवी सन् से पहले की है किन्तु राम की भक्ति और उपासना की परंपरा इसके बाद की है। गुप्त काल में राम की पूजा प्रचलित थी, तथा विष्णुधर्मोत्तर पुराण तथा वराह मिहिर की

रामकथा-सम्बन्धी शोध

'वृहतसंहिता' में राम की प्रतिमा के निर्माण सम्बन्धी नियमों का उल्लेख है। इस प्रकार दक्षिण भारत में आलवार साहित्य में सबसे पहले राम भक्ति का उल्लेख मिलता है। साथ ही साथ हरिवंश 'कलिका पुराण','अध्यात्म-रामायण', 'योगवशिष्ठ', अद्भुतरामायण ', आनंद रामायण ' आदि में रामकथा का उल्लेख मिलता है। फादर बुल्के के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं के राम साहित्य की कथा सामग्री के श्रोतों की जानकारी की दृष्टि से उपर्युक्त पुस्तकें कितनी उपयोगी हैं।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में बारहवीं शताब्दी की तमिल रामायण सबसे प्राचीन है। इसका मुख्य आधार वाल्मीकि रामायण है, सिर्फ भिन्नता जानकी हरण सम्बन्धी वृत्तान्त है जिसका आधार संस्कृत कवि कुमार दास प्रतीत होते है (रामकथा उत्पत्ति और विकास पृष्ठ -२१७)। इस पुस्तक में मलयालम, कन्नड़ आदि दक्षिण भारतीय भाषाओं में राम-काव्य परंपरा की लम्बी सूची दी गयी है। इसी प्रकार उत्तर भारत में राम-साहित्य असमिया, बंगाली तथा उड़िया में मिलती है। बौद्ध रामकथा और जैन रामकथा परंपरा में क्रमशः बौधों ने राम को बोधि-सत्त्व और जैनियों ने आठवाँ बलदेव माना है। रामकथा की परम्परा वास्तव में भारत के प्रायः सभी राज्यों में उपलब्ध है, जिसका ब्यौरा विस्तार से फादर बुके ने अपने शोध प्रबंध में दिया है।

भारत के अतिरिक्त राम-काव्य परंपरा तिब्बती, तुर्किस्तानी, दक्षिण-पूर्वी एशियाई और पश्चिमी भाषा में भी प्राप्त होती है। तिब्बती रामायण का प्रारंभ रावण चरित से होता है, इसमें विष्णु दशरथ से यह प्रतिज्ञा करते है कि वे उनके पुत्र के रूप में जन्म लेंगे| इसमें रावण अपनी कन्या सीता को अनिष्ट के भय से समुद्र में फेंक देता है| इस रामायण में अशोक वन से सीता हरण के बाद की घटनाएँ वाल्मीकि के अनुसार हैं।

इस प्रकार राम की देशी-विदेशी परम्पराओं से सम्बंधित फादर कामिल बुल्के का विस्तृत अध्ययन इस बात का विवेचन करता है कि रामकथा के घटना-प्रसंगों और पात्रों से स्वरुप में अनेकानेक परिवर्तन हुए हैं, लेकिन इसके बावजूद मौलिक एकता का श्रेय वाल्मीकि को है। फादर बुल्के कहते हैं-"विश्व साहित्य के इतिहास में शायद ही किसी ऐसे कवि का प्रादुर्भाव हुआ हो, जिसने भारत के आदि कवि के समान इतने व्यापक रूप से परवर्ती साहित्य को प्रभावित किया हो"।

जीवन के आदर्शों का प्रतिबिम्ब - रामायण

मालती गुप्ता

कनेक्टिकट ट्रंबल हिन्दी पाठशाला

"रामायण", हिन्दू धर्म का बड़ा ही पावन ग्रंथ है। इसमें राजा का प्रजा से, शिष्य का गुरु से, गुरु का शिष्य से तथा परिवार के हर सम्बन्धों के एक दूसरे के प्रति आदर्श व्यवहार की व्याख्या की गई है। रामायण के दोहों का सीधा सम्बन्ध हमारे जीवन के आदर्शों से है। या यूँ कहें कि रामायण मनुष्य के जीवन के आदर्शों का प्रतिबिम्ब है।

यह ग्रंथ हमें जीवन को सही रूप से जीने की राह सिखाता है। हमारे दिन प्रतिदिन के आचार-विचार की परिभाषा देता है। रामायण जहाँ हमें एक ओर कर्मठ बनने का संदेश देती है, वहीं दूसरी ओर हमारी मनोचिकित्सक बनकर हमें निराशा के अथाह समुद्र में डूबने से बचने की राह भी दिखाती है।

यहाँ मैं रामायण के कुछ दोहों व चौपाइयों की व्याख्या कर रही हूँ, जिनसे मेरा साक्षात्कार हुआ है, और मैं आशा करती हूँ कि कर्मभूमि के सभी पाठकों को इसका लाभ मिलेगा। इस चौपाई में जीवन का दर्शन देखिए जिसमें कहा गया है कि मनुष्य को अपने वचन का किस प्रकार पालन करना चाहिए -

रघुकुल रीत सदा चली आई।

प्रान जाये पर वचन न जाई॥

अर्थात् यदि आप किसी को वचन दें तो इस बात का ध्यान रखें कि दिया हुआ वचन हर हालत में निभाना है, चाहे उसके लिए हमें कुछ भी त्याग देना पड़े। यहाँ तक कि अपने प्राणों की बलि भी देने से पीछे नहीं हटना चाहिए। जो मनुष्य अपने वचनों का पालन करते हैं उनके कुल का तथा उनके वंश का नाम ऊँचा होता है।

आपने अपने जीवन काल में शायद यह भी अनुभव किया होगा कि लोग वचन दे तो देते हैं, वायदा कर तो लेते हैं परंतु जब उसे निभाने की बारी आती है तो अक्सर मुँह मोड़ लेते हैं। ऐसा करके वे अपना मान-मर्यादा तो खोते ही हैं साथ में अपने वंश को भी कलंकित करते हैं।

रामायण का एक और दोहा हमें जीवन जीने की राह दिखाता है। अपने प्रति सम्मान की भावना जगाता है और उस सम्मान के सामने सोने की वर्षा भी तुच्छ है, ऐसी प्रेरणा से प्रेरित करता है।

जीवन के आदर्शों का प्रतिबिम्ब - रामायण

आवत हिय हर्षे नहीं, नैनन नहीं सनेह।

तुलसी तहाँ न जाइये, चाहे कंचन बरसे मेह॥

इसका अर्थ है, जहाँ जाने पर हमारे आने की खुशी किसी के मन में ना हुई हो, जिसके घर हम आए हैं, उनकी आँखों में हमारे लिए प्रेम, स्नेह की झलक न दिखाई दी हो। उनके मन में हमारे लिए आदर न दिखाई दिया हो तो उस घर में कभी नहीं जाना चाहिए, चाहे वहाँ कितना ही सोना वर्षा की तरह बरस रहा हो। यानि किसी राजा का महल ही क्यों न हो या इतनी धन दौलत ही क्यों न हो कि वे अपने ऐश्वर्य में इतने खोए हों कि उनके यहाँ हमें उनकी आँखों में अपने प्रति आदर भाव, प्रेमभाव, स्नेह भाव का अभाव महसूस हो, ऐसे महलों व आलीशान घरों में कभी नहीं जाना चाहिए।

अब रामायण का यह दोहा देखिए जो हमें कर्मठता का पाठ सिखाता है -

मन चाहे राचऊ मिले हो सो वहीं सहज सुंदर सावरों।

करुणा निधान सुजान शीलु सनेहु जानत रावरो॥

अर्थात् तदि आप अपने मन में किसी को बसा लो तो वह आपको अवश्य मिलता है। इसी प्रकार यदि आप किसी काम को करने की ठान लें तो आप उसे अवश्य ही पूरा कर सकते हैं। आपके सारे रास्ते आसान हो जाते है। कभी-कभी परिस्थितियों वश हमारा साहस नहीं होता उस मार्ग पर चलने के लिए जिसे पाने की हमारी बेहद इच्छा है, लेकिन हमारा मन उसमें इतना रमा होता है कि आखिर उस रास्ते पर बड़े साहस से हम चल ही पड़ते हैं तो हमें सफलता अवश्य मिलती है। तुम्हारे इरादे से तुम्हारा मार्ग अवश्य ही प्रशस्त हो जाता है। इस प्रकार रामायण का यह पाठ हमें प्रत्येक परिस्थिति में आगे बढ़ने का संदेश देता है।

अब एक और चौपाई की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगी जो जीवन की सच्चाई बन कर अनेकों बार हम सभी के सामने आया है।

होई है वही जो राम रचि राखा।

को करी तरफ बढ़ावाई साखा।

अर्थात् ईश्वर ने हमारे लिए जो सोच रखा है या जो होना लिखा है आखिर वही होगा और वही होता है। इसीलिए इस बात पर वाद-विवाद करने से कोई फायदा नहीं है। इसे इस प्रकार समझना चाहिए - कभी-कभी

जीवन के आदर्शों का प्रतिबिम्ब - रामायण

हम कुछ पाना चाहते हैं, या करना चाहते हैं और लाखों प्रयासों के बाद भी हम उसे नहीं पाते हैं या वह कर नहीं पाते हैं। अंत में हम निराश हो जाते हैं व दुःखी होते हैं। अपने से अनेकों तर्क-वितर्क करते हैं। तब निराश होने के स्थान पर या अपने को निराशा के महासागर में डुबाने से यदि आप इस राह का ध्यान करें तो आपको अवश्य ही सबल मिलेगा और तब यदि आपने कभी अनुभव किया हो तो आपको यह जानकर संतोष मिलता है कि शायद अच्छा ही हुआ जो वह नहीं मिला या वह काम नहीं बना क्योंकि तब तक उसमें आपको कुछ अच्छाई ही नजर आ जाती है। आपको या तो उससे ज्यादा अच्छी चीज़ मिल जाती है या वह जो आप पाना चाहते थे उसकी कमियाँ या बुराईयाँ पता चल जाती हैं।

इस तरह के अनेकों दोहे रामायण जैसे महाग्रंथ में हैं जो हमें अनेकों प्रकार से जीवन पथ पर हमारा मार्ग प्रशस्त करते हैं।

एक श्लोकी रामायण

आदौराम तपोवनादगिमनम् हत्वा मृगं कांचनं ।
वैदेहीहरणं जटायु मरणं सुग्रीव संभाषणम् ।।
बाली नरि्दलनं समुद्र तरणं लंकापुरी दाहनम् ।
पश्चात् रावणकुंभकर्ण हननं एतदधी रामायणम् ।।

श्रीराम जी को वनवास हुआ। वन में स्वर्ण मृग के छलावे में आने से रावण द्वारा सीता का हरण किया गया। सीता की रक्षा में पक्षी राज जटायु ने प्राण त्यागे। भगवान राम द्वारा सीता की खोज के दौरान सुग्रीव से मित्रता हुई। सुग्रीव की सहायता से भगवान राम सीता की खोज करते हुए समुद्र तट पर पहुँचे। जहाँ से श्री हनुमान ने लंका में जाकर लंका दहन किया। समुद्र पर सेतु निर्माण हुआ। अंत में युद्ध में भगवान राम के हाथों रावण, कुंभकर्ण मृत्यु को प्राप्त हुए। श्री राम की विजय हुई।

रामायण में ऐसा क्या है?

रचिता सिंह

विश्व में हिंदू चाहे जहाँ रहें, उनके घर में रामायण की पुस्तक अवश्य मिलेगी। ऐसा क्या है रामायण में जिसे बार-बार लिखने के लिए हर कवि, लेखक, और नाटककार लालायित रहते हैं? वहीं दूसरी ओर जन-जन इसे बारम्बार पढ़ने के लिए और जानने के लिए सदैव पलकें बिछाए तैयार रहे हैं। विश्व की शायद ही कोई और कहानी हो जिसे बहुत सी भाषाओं और रूपों में लिखा गया हो। रामायण का कोई न कोई रूप आपको हर भाषा के पुस्तकालय में मिल जाएगा।

जिस रामायण के नायक “श्री राम” स्वंय गुणों की खान हों, जो उच्च चरित्र की परिभाषा और मर्यादाओं की चरम सीमा हों, जो राम कर्तव्य निष्ठा का पर्याय हों, ऐसे राम के चरित्र को उजागर करने वाला ग्रंथ ‘राम चरित मानस’ यदि संसार का सबसे अधिक लोकप्रिय ग्रंथ नहीं होता तो अवश्य ही यह आश्चर्य का विषय होता। इस ग्रंथ के द्वारा गोस्वामी तुलसी दास जी ने यह बताने का प्रयास किया है कि यदि मनुष्य चाहे तो अपने चरित्र को ऊँचा उठाकर कर्तव्यनिष्ठा और कर्मयोग की अग्नि में अपने दुष्कर्मों को जलाकर स्वयं को राम की तरह देवता बना सकता है।

राम के जीवन को देखें तो आप पाएँगे कि वे हमारी तरह मनुष्य थे। उनका भी हमारी तरह परिवार था, और उस परिवार में अलग-अलग स्वभाव वाले सदस्य थे। उस परिवार में अनेक समस्याएँ थीं। राम ने इन समस्याओं का सामना कैसे किया, यह रामायण हमें बताती है। राम के जीवन में कोई चमत्कार नहीं हुए। राम ने एक ईमानदार और कर्तव्य निष्ठ जन-नायक का जीवन जिया। रामायण हमें बताती है कि जब हम सत्य और धर्म की राह पर चलते हैं तो हमें प्रकृति से, ईश्वर से, तथा अपने आस-पास के अच्छे लोगों से सहायता मिलती है, और हम उस कार्य में सफल भी होते हैं। इसके साथ-साथ रामायण हमें यह भी बताती है कि राजमहल में रहकर सुख भोगना ही सुखी जीवन नहीं है, बल्कि समाज में फैली हुई बुराईयों को मिटाना, अन्याय और अत्याचार के लिए लड़ना, देश की रक्षा करना, बड़ों की आज्ञा का पालन करना, दूसरों के सुख-दुख में भागीदार होना, अपने शत्रु पर कभी दया न करना आदि भी हमारे जीवन के उद्देश्य हो सकते हैं। किंतु इन सभी कार्यों को करने के लिए धर्म की राह लेनी होती है, और यह राह त्याग, बलिदान और तप से परिपूर्ण होती है।

यदि हम राम के जीवन को देखें तो हम पाएँगे कि राम एक उच्च कोटि के पुत्र, एक विशाल हृदय भ्राता, एक आदर्श पति, एक सर्वश्रेष्ठ शिष्य, और एक अद्वितीय प्रजानायक थे। रामायण की पूरी कहानी

रामायण में ऐसा क्या है?

रचिता सिंह

इन्हीं संबंधों को निभाने की कहानी है, और शायद इसीलिए यह कथा हमारे हृदय के इतने निकट है।

हमारा जीवन और कुछ नहीं बल्कि रिश्तों की उलझन है। यही उलझन हमें सुख के आकाश में ले जाती है, और कभी दुख के सागर में गोते लगवाती है। जो मनुष्य अपने जीवन में रामायण और राम चरित्र को उतार लेते हैं, वे जीवन के हर सुख-दुख को समान भाव से देख पाते हैं। ठीक उसी तरह जिस तरह राम ने अयोध्या के राजपाठ को और भीषण वनवास को समान भाव से देखा था।

जो रामायण पढ़ते हैं, समझते हैं, वे इसकी शक्ति को जानते हैं। परंतु यदि आपने रामायण अभी तक नहीं पढ़ी या आपके घर में इसकी एक भी प्रति नहीं है तो देर नहीं हुई है। आप आज ही रामायण खरीदें, पढ़ें, और सुनें। रामायण को पढ़ना, गाना या उसका आयोजन करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे अपने जीवन में अपनाएँ।

जो हिंदू माता-पिता अपने बच्चों को रामायण की कथा नहीं सुनाते, वे माता-पिता अपने बच्चों को हिंदू धर्म की शिक्षा से वंचित रखते हैं। हममें से अधिकांश लोग धार्मिक होने का अर्थ नहीं समझते। प्रतिदिन आरती करके, पूजा-पाठ कर्मकांड करके हम अपने को धार्मिक मानते हैं। किंतु धार्मिक व्यक्ति वह है जो धर्म की राह पर चले। सच्ची कर्तव्यनिष्ठा ही धर्म है। यह कर्तव्यनिष्ठा परिवार के प्रति, समाज के प्रति, और राष्ट्र के प्रति होनी चाहिए। यही रामायण का संदेश है।

हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

व्याख्याकार: स्वामी डॉ. रामकमल दास वेदांती जी महाराज

संकलन: अर्चना कुमार

चौपाई: **जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहूं लोक उजागर ॥१॥**

अर्थ - ज्ञान और गुण के समुद्र श्री हनुमान जी की जय हो! जो तीनों लोकों को अपने शुभ चरित्र के द्वारा जागृत करते हैं, ऐसे कपीस की जय हो।

भावार्थ - 'ज्ञान' - लंका पर विजय प्राप्त करने के बाद श्री राम जी ने हनुमान जी को आत्मा, अनात्मा और परमात्मा का वास्तविक स्वरूप, तीनों के कार्य और कर्तव्य परायणता का बोध कराया था। ईश्वरीय माया का स्वप्न में भी प्रभाव न रहे, ऐसा आशीर्वाद भी दिया था। जानकी जी ने भी प्रसन्नचित् होकर हनुमान जी को आशीर्वाद दिया कि ईश्वर प्राप्त करने और कराने में जो भी सौम्यगुण हैं, वह सब तुम्हारे हृदय में निवास करें।

"हनु" - शब्द विनाश के लिए है। ब्रह्म से विमुख करने वाले जो सूक्ष्म या स्थूल कार्य हैं, उनका हनन करना ही जिसका काम है, उसे 'हनु' कहते हैं। इसलिए 'हनुमान' नाम पड़ा।

हनुमान जी में "सौम्य गुण" है। राग, द्वेष, नफरत आदि से रहित जो केवल ईश्वर प्राप्ति के लिए ही प्रयत्न करे और करावे उसे "सौम्यगुण" कहते हैं।

उदाहरण - श्री हनुमान जी को लंका दहन से पहले रावण की सभा में ले जाया गया, तो रावण को देखते हुए, विचार कर रहे हैं। इसका तेज, इसकी योग्यता और विद्या प्रशंसनीय है। यदि वह राक्षस-स्वभाव को छोड़ दे और जानकी जी को दे देवें तो मैं रामजी से पूरी सिफारिश करूँगा कि वह मारने योग्य नहीं है। रावण के लिए त्रिलोकी का शासन तो एक साधारण बात है। ऐसे व्यक्ति को सुधारने का प्रयास करना चाहिए।

क्या हनुमान जी में ये कोई साधारण गुण है? क्या कोई ऐसा व्यक्ति भी उत्पन्न हुआ है जो अपने सद्गुणों को जीवों के उद्धार के लिए ही लगाता हो और स्वयं कष्ट सहता हो?

हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

व्याख्याकार: स्वामी डॉ. रामकमल दास वेदांती जी महाराज

संकलन: अर्चना कुमार

"जय कपीस" - अर्थ - "क जलम् रसम् वा पिबति इति कपीस।" जो बल या रस का पान करता हो उसे कपि कहते हैं। ईश का अर्थ है - शासन।

जैसे सूर्य अपनी किरणों द्वारा रस व जल को ग्रहण करके वर्षा के समय, शुद्ध व निर्मल बना कर प्राणीमात्र का जीवनदान देता है, उसी प्रकार श्री हनुमान जी वेद उपनिषद्, पुराण, शास्त्र, योगीगण, भक्तगण और यज्ञादि कर्म में निपुण, सज्जन पुरुषों द्वारा जैसी आराधना की गई है, उस उपासना रूपी रस को स्वयं पान करके अपने चरित्रों द्वारा रस रूपी वर्षा करके तीनों लोकों को जागृत करते हैं। यानि ईश्वर की ओर ले जाते हैं। इसलिए 'कपीस' कहा है। ॥१॥

चौपाई : **राम दूत अतुलित बलधामा। अंजनि पुत्र पवन सुत नामा ॥२॥**

अर्थ - रामजी के दूत, अंजनी के पुत्र तथा पवन-सुत नाम वाले हनुमान जी की जय हो।

भावार्थ - तुलसी के हनुमान तीनों विशेषणों से युक्त हैं। साधारण चरित्र में हनुमान जी कहते हैं -

"दासोअहं कौशलेन्द्रस्य"

"मैं अयोध्यापति राम को अपना सर्वस्व अर्पण कर चुका हूँ।"

अनात्मा जो शरीर है उससे सेवक भाव दर्शाया है और परमात्मा को सर्वस्य अर्पण किया है। उन राम जी के वास्तविक स्वरूप को दर्शाने के लिए ही मैं लंका में आया हूँ। भक्त को प्यार, राक्षस को मार और जनक नन्दिनी को आश्वासन, ये तीनों गुण रामजी की प्राप्ति के मुख्य साधन हैं। हनुमान जी का चरित्र राम नाम के आनन्द को अनुभव कराने के लिए ही है। दूत का काम है अपने स्वामी की श्रेष्ठता का प्रदर्शन करना। लंका जाते समय मैनाक को गले लगाया, " राम-काज कीन्हें बिना मोहि कहाँ विश्राम।" इस प्रकार यहाँ शरणागत से प्यार किया, सुरसा को नमस्कार किया, सिंहिका को चीर डाला, लंकिनी को केवल चमाट से ही समझा दिया। विभीषण को अपने कुल की निन्दा करते हुए (कि मैं तो कपि कुल का हूँ) समझाया। यह सब बलधामा का अर्थ है। कहीं भक्ति बल, कहीं योगबल, कहीं शरणागत बल दिखाया। जहाँ जिस जिस बल की आवश्यकता हुई वहीं उस बल से जीव को ईश्वर की अनुभूति कराई।

हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

व्याख्याकार: स्वामी डॉ. रामकमल दास वेदांती जी महाराज

संकलन: अर्चना कुमार

"अंजनि पुत्र" - पुत्र शब्द का अर्थ है - कायिक, वाचिक और मानसिक कर्मों से जो पीड़ित है, उसके महान कष्टों का निवारण करने की क्षमता रखता हो।

एक बार रावण सैन्य सहित देव लोक में गया। रात्रि में पुँजिकस्थला नाम की अप्सरा, ब्रह्मलोक में आकाश मार्ग से जा रही थी। इसके रूप और तेज से मोहित होकर रावण ने उसकी बाँह पकड़ ली। वह उससे बाँह छुड़ाकर ब्रह्माजी के पास पहुँची। ब्रह्मा जी को उलाहना देते हुए उसने कहा -- "आप दुष्टों को वरदान देते हो, जिससे आपकी शरण में रहने वाले दुःख उठाते हैं। ऐसी आधीनता मुझे स्वीकार नहीं।" ब्रह्मा जी ने क्रोधित होकर कहा - "आज से रावण यदि किसी स्त्री को छेड़ेगा तो उसके सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे।" अप्सरा ने उत्तर दिया– "फिर भी तो आपके आधीन रही, मैं अपना बदला स्वयं लेना चाहती हूँ, आपके आश्रय से नहीं।" वही अप्सरा लड़की होकर अंजना नाम से प्रसिद्ध हुई। अंजना का पुत्र हनुमान ही 'पुत्र' कहलाने योग्य हैं। अंजना ने तप करते समय ब्रह्मा, विष्णु और महेश को कहा था कि "आपकी शक्ति के बाहर ही मेरा पुत्र होना चाहिए। उस पर आपका शासन न हो।" उन्होंने 'तथास्तु' कह दिया। भला ऐसी माता का 'पुत्र' कहलाने योग्य कौन हो सकता है? यह है तुलसी के - "अंजनि पुत्र" ।

"पवन सुत" - पवन ने वरदान देते हुए कहा था - "जैसे मैं अनायास ही इच्छानुसार गमन करता हूँ, पर्वत, वृक्ष, समुद्र और तीनों लोकों को कंपा देता हूँ, वह मैं अपनी बल रूपी शक्ति सब इसे (हनुमानजी को) प्रदान करता हूँ। यह मेरे नाम से प्रसिद्ध होगा। इसलिए "पवनसुत" कहा गया है। ॥ २ ॥

सुन्दरकाण्ड का अर्थ

माणक काबरा

माणक काबरा जी चार वर्षों से एडिसन पाठशाला के संचालक हैं| माणक जी हिंदी यू.एस.ए. के सभी कार्यक्रमों में उपस्थित होकर सक्रिय रूप से विशेष योगदान देते हैं| इन्हें हिंदी साहित्य एवम् कविताओं में रुचि है, और ये रामचरित्र मानस का नियमित रूप से पठन और अध्ययन करते रहते हैं| माणक जी स्वभाव से अत्यधिक शांत एवम् गंभीर हैं, और एक अच्छे कार्यकर्ता के सभी गुण इनमें देखे जा सकते हैं|

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि रामचरितमानस को ७ काण्डों में बाँटा गया है। बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड, परन्तु विश्व में सबसे अधिक सुन्दरकाण्ड पढ़ा जाता है क्योंकि सुन्दरकाण्ड को रामायण का हृदय भी कहा जाता है। बहुत से लोग इसे प्रतिदिन नियम से पढ़ते हैं तथा बहुत से लोग प्रत्येक शनिवार और/या मंगलवार को पढ़ते हैं ।

जब सभी वानरों, जामवंत, अंगद और हनुमानजी को पता चलता है कि सीता माता सात समुद्र पार लंका में हैं, तो सभी परेशान होते हैं, कि यह समुद्र कैसे पार किया जाए? तब जामवंत जी हनुमानजी को उनकी शक्ति याद करवाते हैं, जिन्हें हनुमानजी एक ऋषि के श्राप से भूल जाते हैं। जब हनुमानजी छोटे थे, तब बहुत ही शरारत करते थे। साधु, संत और ऋषियों को बहुत परेशान किया करते थे, इस कारण एक ऋषि ने उन्हें श्राप दिया कि वे अपनी शक्ति भूल जाएँगे, और जब कोई उन्हें स्मरण कराएगा तब उन्हें अपनी शक्ति का बोध होगा। सुन्दरकाण्ड में जब जामवंत जी ने उन्हें उनकी शक्ति का स्मरण करवाया तो हनुमानजी ने जोर से हुंकार भरी और उड़कर समुद्र पार करने लगे। हनुमाजी के बल और बुद्धि की परीक्षा लेने देवताओं ने सुरसा को भेजा।

सुरसा ने उनको खाने के लिए अपना मुख खोला तो हनुमान जी सुरसा के मुख से बड़े हो गए, और इस प्रकार सुरसा जैसे-जैसे अपना मुख बढ़ाती जाती थी वैसे-वैसे हनुमान जी अपना आकार बढ़ाते जाते। जैसे ही सुरसा ने अपना मुख एक सौ बीस योजन बढ़ाया, हनुमानजी ने अपना आकार बहुत छोटा कर लिया और सुरसा के मुख में जाकर वापिस आ गए। क्योंकि वे अपना समय नष्ट न करके भगवान श्रीरामजी का कार्य पूर्ण करना चाहते थे। उनके बुद्धि के इस कौतुक से प्रसन्न होकर सुरसा ने हनुमानजी को आशीर्वाद दिया, और कहा तुम अवश्य ही अपने कार्य में सफल होगे।

> "लोभ और मोह आज कल सुरसा की तरह ही मुँह बढ़ाते ही जा रहे हैं, और हमें हनुमानजी की तरह छोटा होकर इसमें से निकलकर सदैव आगे बढ़ना चाहिये।"

सुन्दरकाण्ड का अर्थ

माणक काबरा

हनुमान जी आगे बढ़े तो लंकिनी नाम की राक्षसी ने लंका के द्वार पर उन्हें रोका, जिसकी नज़रों से बच कर कोई पक्षी भी लंका में प्रवेश नहीं कर सकता था। उन्होंने अपनी मुठ्ठी से लंकिनी के सर पर वार किया तो वह रक्त वमन करती हुई पृथ्वी पर गिर गई।

"आज जब भी आप कोई अच्छा कार्य करते हैं तो दुनिया में बहुत से लोग मिल जायेंगे जो अच्छा कार्य करने में विभिन्न प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न करेंगे या आगे नहीं बढ़ने देंगे। परन्तु हमें इन बाधाओं को पार करते हुए सदैव सद्मार्ग की ओर गतिशील रहना चाहिए।"

लंका में जब हनुमानजी ने एक घर देखा जिसकी दीवारों पर राम नाम लिखा था तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने सोचा, रावण के राज्य में यह कैसा घर है पता लगाना चाहिए, और जैसे ही वे घर में प्रवेश करने वाले थे, उनके कानों में राम नाम के शब्द गूंजने लगे। उन्होंने ब्राह्मण का रूप बनाया और अन्दर गए, विभीषण जी ने जब आहट सुनी तो बाहर आए और हनुमानजी को प्रणाम किया। विभीषण जी ने उन्हें बताया कि सीता माता को रावण ने अशोक वाटिका में रखा है।

"इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आप चाहे दुनिया में कहीं भी रहें, (जैसे विभीषण राक्षसों के बीच रहते थे) यदि आपके मन में ईश्वर के प्रति पूर्ण विश्वास है तो आप को कोई नहीं बहका सकता और न ही गलत मार्ग पर ला सकता है। हमें अपनी मंजिल अवश्य मिलेगी ,से विभीषण को उनके प्रभु श्रीराम मिले।"

जब हनुमानजी ने सीता माता को श्री राम जी की मुद्रिका दी तो पहले तो सीता माता को आश्चर्य हुआ, परन्तु जब हनुमान जी ने भगवान राम से उनकी भेंट की कथा सुनाई तो सीतामाता के मन में विश्वास

सुन्दरकाण्ड का अर्थ

माणक काबरा

हुआ कि वे रामदूत हैं। सीतामाता की आशीष से और श्रीराम की कृपा से हनुमानजी ने लंका में आग लगाई और समुद्र पार कर अपने मित्रों से मिले। हनुमानजी को देख कर सभी बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि सभी ने शपथ ली थी कि वे सीतामाता का पता लगाये बिना वापस नहीं जाएँगे। श्रीराम और लक्ष्मण जी ने हनुमान जी को गले लगाया और हनुमान ने सभी बातें बताईं व गर्वित हुए बिना कहा कि प्रभु ये सब तो आपकी कृपा से ही हुआ है।

उधर विभीषण रावण को एक बार और समझाने का प्रयास करते हैं, परंतु रावण गुस्से में उन्हें लात मारकर लंका से निकल देते हैं। विभीषण श्रीराम जी की शरण में आते हैं तथा श्रीराम उन्हें लंका का राजा घोषित कर देते हैं। हनुमान जी श्रीराम से कहते हैं, प्रभु अब थोड़ी सी भी देर किये बिना हमें लंका की ओर बढ़ना चाहिए और माता सीता को रावण की कैद से मुक्त करवाना चाहिए।

सभी फिर समुद्र किनारे आते हैं, पूरी सेना के साथ इस समुद्र को कैसे पार किया जाये इसका विचार करने लगते है। विभीषण कहते हैं कि समुद्र से विनती करने पर हमें समुद्र अवश्य रास्ता देगा ,यह विचार श्रीराम को अच्छा लगता है और वे समुद्र की पूजा करते हैं। तीन दिन बीतने पर भी जब समुद्र उन्हें मार्ग नहीं देता तो श्रीराम क्रोध में समुद्र को सुखाने के लिए अपना धनुष बाण उठा लेते हैं। इससे समुद्र देव घबरा कर प्रकट होते हैं। वे बताते हैं कि नील और नल को आशीर्वाद है कि वो पत्थर को पानी में तैरा सकते हैं और इस प्रकार पुल का निर्माण करके पूरी सेना पार हो सकती है ।

<u>सारांश:</u>

हर अच्छे कार्य में बाधाएँ तो आती ही हैं, जैसे हनुमानजी जब सीतामाता की खोज में लंका गए तो बीच में सुरसा ,लंकिनी इत्यादि ने उनका रास्ता रोकना चाहा परन्तु उनका तो एक ही लक्ष्य था, श्रीराम का कार्य पूरा करना। इसलिए हम जो भी कार्य हाथ में लें व उसे पूरी लगन के साथ करें तो कार्य संपूर्ण होने में कोई संदेह नहीं रह जाता। हनुमानजी जब से सीता माता की खोज में निकले उन्हें केवल उनके प्रभु श्रीराम का कार्य अति शीघ्र पूर्ण करने की धुन थी। वो सभी से कहते हैं **"राम काज कीन्हें बिनु, मोहे कहाँ विश्राम"।**

आओ हम सब मिलकर ये कहें "हिंदी भवन बनाये बिना, हमें कहाँ विश्राम" और अपनी शक्ति अनुसार इस कार्य में लग जाएँ।

जय श्रीराम

राम नाम की महिमा

मन्नालाल जी

मन्नालाल जी, सेवानिवृत राम के भक्त हैं, जो भारत के मुंबई शहर में रहते हैं और आजकल अमेरिका आये हुए हैं। ये अपना अधिकतर समय लोगों को राम नाम याद दिलाने में व्यतीत करते हैं। अपने गुरु श्री राजेन्द्रजी गर्ग के परम भक्त हैं, और अमृत वाणी के सत्संग में नियम से जाते हैं| इनके पास "अमृत वाणी" की पुस्तक हमेशा उपलब्ध रहती है जो ये सभी तक पहुँचाना चाहते हैं।

यह बात निर्विवाद सत्य है कि राम नाम ही सभी नामों से बढ़कर है। कवि श्रेष्ठ संत श्री तुलसीदास जी ने राम चरित मानस की शुरुआत में नाम की अगाध महिमा को वन्दन किया है और कई चौपाईयों में इसकी महानता का वर्णन किया है। नाम महिमा वर्णन करने में जब तुलसी दास जी हार गए तो हमारी क्या गिनती है? राम भक्त हनुमान जी के बारे में तो कविश्रेष्ठ को लिखना पड़ा कि

"सुमरि पवन सुत पावन नामू, अपने बस करि राखे रामू"

यानि राम को वश में करना हो तो राम का नाम जाप सतत् करना चाहिए। हम किसी व्यक्ति को उसके नाम से बुलाये तो हो सकता है वह आवाज सुने या ना सुने, या वह आए या ना भी आए, परंतु आ जाते हैं राम, कोई बुला कर देख ले। राम का नाम लेकर जंगल में भी पुकारो तो राम वहाँ भी आ जाते हैं, चाहिए तो बस सच्ची नाम लगन। भक्त ध्रुव जब जंगल में तपस्या करने गए तो नारद जी ने अपने आशीर्वाद में भक्त ध्रुव को सतत् नाम जाप का ही उपदेश दिया था। संत श्री सत्यानन्द जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी नामक ग्रंथ में कई बार कहा है **"राम नाम में राम को सदा विराजित जान"**।

"राम को वश में करना हो तो राम का नाम जाप सतत् करना चाहिए"

जब हम इस संसार से अंतिम महायात्रा पर जाएँगे तो यहाँ की सभी वस्तुएँ यहीं धरी की धरी रह जाएँगी, केवल राम नाम हमारे साथ चलेगा। यह राम का नाम ही पिछले कई जन्मों से हमारे साथ था, है और रहेगा।

तुलसी दास जी ने कहा कि राम नाम अलौकिक है। परम आनन्द का दाता है और तो और स्वयं शंकर भगवान भी महामंत्र "जोई जपत महेसू, कासी मुकति हेतू उपदेसू"| जिस पावन पवित्र नाम को पाकर गणेश

राम नाम की महिमा

जी प्रथम वन्दनीय हो गए उस नाम महाराज की महिमा "जासू जानि गन राऊ, प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊँ" ।

आदि कवि बाल्मीकि जी तो डाकू थे, उनको तो सिर्फ "मरा मरा" ही आता था तो संतों ने कृपा करके उन्हें मरा मरा ही जपने की आज्ञा दी और वे बाल्मीकि जी "भये सुद्ध करि उल्टा जापू", और बाल्मीकि जी ने रामायण की रचना कर डाली। आप राम का नाम पवित्र होकर ही लो यह कोई नियम नहीं है अरे! नाम लेकर ही तो आप पवित्र बनोगे। यहाँ तक कि "भाय कुभाय आनख आलस हूँ"|

"नाम जपत मंगल दिसी दसहूँ", जैसे बर्फ की शीतलता हाथ लगाने से पता चलती है। नाम की महानता नाम लेने से जागृत होती है। राम नाम की महिमा तो ऋषि-मुनि भी नहीं वर्णन कर सके तो हमारी क्या हैसियत है? राम को जहाँ लंका विजय करने के लिए समुद्र पार करने हेतु सेतु का निर्माण करना पड़ा वहाँ हनुमान जी बस राम नाम लेकर समुद्र लाँघ गए। तुलसी दास जी ने सुन्दरकाण्ड में स्पष्ट लिखा है :

पापिहूँ जाकर नाम सुमिरही, अली अगाध भव सागर तरही।

आसु नाम पपि सुनहुँ भवानी, भव बन्धन काटही नर ज्ञानी ॥

इस प्रकार मेरी मन्द बुद्धि के अनुसार मैंने नाम जाप के बारे में लिखा है, जो आप पढ़ चुके हैं। आगे निवेदन है कि

कहाँ लगि कहों नाम बड़ाई, रामू न सकई नाम गुन गाई।

रामायण के प्रश्न

सुधा अग्रवाल

प्रश्न १: रामायण के पहले श्लोक में किस देवी एवं देवता की तुलसी दास जी ने वंदना की है?

उत्तर : १. शंकर एवं पार्वती जी

२. सीता जी एवं राम जी

३. गणेश जी और सरस्वती जी

प्रश्न २: शंकर जी ने सती जी का परित्याग क्यों किया?

उत्तर : १. सती जी ने सीता जी का रूप धारण करके राम जी की परीक्षा ली थी।

२. सती जी ने शंकर जी से कहा कि आप मन ही मन राम जी को क्यों जपते हो?

३. सती जी ने रघुनाथ जी का अपमान किया।

प्रश्न ३: वशिष्ठ जी ने पुत्र प्राप्ति के लिए दशरथ जी से "पुत्र कामेष्ठी" यज्ञ किस ऋषि को बुलवाकर करवाया?

उत्तर : १. वेद ऋषि

२. श्रृंगी ऋषि

३. अत्रि ऋषि

प्रश्न ४: किस हिन्दी महीने एवं किस तिथि में राम जी का जन्म हुआ?

उत्तर : १. पौष महीना चौथी तिथि

२. श्रावण महीना छठी तिथि

३. चैत्र महीना नवमी तिथि

प्रश्न ५: कौन से ऋषि ने राक्षसों का सर्वनाश करने के लिए दशरथ जी से उनके दो पुत्रों को माँगा था?

उत्तर : १. नारद ऋषि

२. विश्वामित्र जी ३. अत्रि ऋषि

रामायण के प्रश्न

सुधा अग्रवाल

प्रश्न ६: सीता जी एवं राम जी का विवाह किस ऋतु व महीने में हुआ था?

उत्तर : १. हेमंत ऋतु एवं अगहन महीना

२. बसंत ऋतु एवं पौष महीना

३. श्रावण ऋतु एवं चैत्र महीना

प्रश्न ७: राम जी एवं सीता जी को कौन रथ में बैठाकर १४ वर्ष वनवास छोड़ने के लिए ले गए थे?

उत्तर : १. वशिष्ठ जी

२. भरत जी

३. सुमंत जी

प्रश्न ८: अयोध्या को छोड़ने के बाद राम जी सबसे पहले किस नगर में पहुँचे व किस से भेंट हुई?

उत्तर : १. नगर : श्रृंगवेर पुर, भेंट हुई : निषाद राज जी से

२. नगर : प्रयाग राज भेंट हुई : अत्रि जी से

३. नगर : चित्रकूट भेंट हुई : विश्वामित्र जी से

प्रश्न ९: राम जी की चरण पादुका मस्तक पर रखकर, कौन वापस अयोध्या आए?

उत्तर : १. शत्रुघ्न जी

२. सुमंत जी

३. भरत जी

प्रश्न १०: दशरथ जी के कौन से बेटे ने १४ वर्षों तक अयोध्या में रहकर सिर पर जटा-जूट धारण की एवं मुनियों की तरह धरती पर सो कर कठिन तपस्या की?

उत्तर : १. भरत जी २. लक्ष्मण जी ३. राम जी

रामायण के प्रश्न

सुधा अग्रवाल

प्रश्न ११: किस ऋषि की पत्नी ने सीता जी को दिव्य आभूषण एवं वस्त्र दिए थे तथा नारी धर्म के बारे में समझाया था?

उत्तर : १. अत्रि जी की पत्नी अनुसूया जी

२. गुरु वशिष्ठ जी की पत्नी अरुन्धती जी

३. शंकर जी की पत्नी गौरा जी

प्रश्न १२: कौन राम जी, लक्ष्मण जी एवं सीता जी को अगस्त्य जी के आश्रम में लाए थे?

उत्तर : १. सुतीक्षण जी

२. वशिष्ठ जी

३. निषाद राज जी

प्रश्न १३: अगस्त्य मुनि जी ने राम जी को गोदावरी के पास रहने के लिए कौन सा उचित स्थान बताया?

उत्तर : १. जनकपुर

२. रामसेतु

३. पंचवटी (दण्डक वन)

प्रश्न १४: गिद्धराज जटायु जी से राम जी की भेंट कहाँ हुई?

उत्तर : १. लंका में

२. पंचवटी में

३. अयोध्या में

प्रश्न १५ : शूर्पणखा की नाक किसने काटी थी?

उत्तर : १. राम जी

२. लक्ष्मण जी ३. सीता जी

रामायण के प्रश्न

सुधा अग्रवाल

प्रश्न १६: किस पक्षी ने रावण को चोंच से मार कर उसका शरीर विदीर्ण कर दिया था?

उत्तर : १. गिद्धराज जटायु

२. काकभुशुण्डि

३. कबूतर

प्रश्न १७: मतंग ऋषि जी ने शबरी को क्या आशीर्वाद दिया था?

उत्तर : १. शबरी को राम-सीता जी के दर्शन होने का

२. शबरी को बैकुंठ मिलने का

३. शबरी को ऋषि मुनियों की संगत मिलने का

प्रश्न १८: राम जी ने शबरी को कौनसी भक्ति का वरदान दिया?

उत्तर : १. अचला भक्ति

२. नवधा भक्ति

३. कृष्णा भक्ति

प्रश्न १९ : राम जी का बल देखने के लिए किसका पुत्र कौए का रूप धारण करके सीता जी के चरणों में चोंच मारकर भागा था?

उत्तर : १. भेल-भिलनी आदिवासी

२. देवराज इन्द्र का पुत्र जयंत

३. निषाद राज का पुत्र

प्रश्न २० : राम जी की हनुमान जी से भेंट कहाँ हुई थी?

उत्तर : १. हिमालय पर्वत पर

२. लंका में ३. रिष्यमूक पर्वत पर हनुमान जी ब्राह्मण का भेष धारण कर के मिले थे।

रामायण के प्रश्न

सुधा अग्रवाल

प्रश्न २१ : हनुमान जी को बलवान होने का एहसास किसने दिलाया तथा उनकी शक्तियों को याद करवाया?

उत्तर : १ अंगद

२. नल एवं नील

३. जाम्बवंत जी

प्रश्न २२ : हनुमान जी ने लंका को जलाया था, परंतु एक घर को नहीं जलाया था, वह घर किसका था?

उत्तर : १. विभीषण जी का

२. मेघनाथ जी का

३. कुम्भकर्ण जी का

प्रश्न २३ : सीता जी किस नाम से राम जी को पुकारती थीं?

उत्तर : १. करुणानिधान

२. दयानिधान

३. भक्तिनिधान

प्रश्न २४ : कुम्भकर्ण ने रावण को क्या समझाया?

उत्तर : १. भाई! तुमने सीता को चुरा कर अच्छा किया।

२. भाई तुम्हें राम लक्ष्मण को भी चुरा लाना था

३. मूर्ख भाई! तुम जगजननी जानकी जी को क्यों चुरा लाए।

प्रश्न २५ : राम जी ने लंका में लक्ष्मण जी को किसके अंतिम क्षणों में उससे उपदेश लेने भेजा?

उत्तर : १. रावण से

२. कुम्भकर्ण से ३. मेघनाथ से

रामायण के प्रश्न

सुधा अग्रवाल

प्रश्न २६ : प्रभु राम जी वनवास से लौटने के बाद किस माता के भवन में सबसे पहले गए?

उत्तर : १. कौशिल्या जी के भवन में

२. सुमित्रा जी के भवन में

३. कैकयी जी के भवन में

प्रश्न २७ : काकभुशुण्डिजी किसको राम कथा सुना रहे हैं?

उत्तर : १. पक्षी राज गरुड़ जी को

२. शुकदेव जी को

३. वशिष्ठ जी को

प्रश्न १८ : शिवजी रामचन्द्र जी की महिमा किसको सुना रहे हैं?

उत्तर : १. सती जी को

२. पार्वती जी को

३. हिमालय जी को

प्रश्न २९ : रामचरित मानस में कितने काण्ड हैं?

उत्तर : १. सात

२. आठ

३. पाँच

प्रश्न ३० : रामचरित मानस का कौन सी काण्ड सबसे अधिक प्रचलित है?

उत्तर : १. सुन्दर काण्ड

२. अयोध्या काण्ड ३. बाल काण्ड

रामायण के प्रश्न

सुधा अग्रवाल

प्रश्न ३१ : रामचरित मानस किसने लिखी?

उत्तर :
१. तुलसी दास जी ने
२. कबीर जी ने
३. शुकदेव जी ने

प्रश्न ३२ : रामायण किसने लिखी?

उत्तर :
१. बाल्मीकि जी ने
२. तुलसी दास जी ने
३. शुकदेव जी ने

उत्तर पृष्ठ ४७ पर

GARDEN STATE PHYSICIANS P.C.

21 Jefferson Plaza (off Raymond Rd.), Princeton, NJ 08540

Dr. Sonia Deora & Dr. Srinivas Mendu

Board Certified in Family Practice and Internal Medicine

Special Interest in Women's Healthcare

Physical Exams, annual pap smears

Blood work done on premises

EKGs Halter Monitors

Spirometry, Nebulizer Treatments

Management of cuts, minor burns & lacerations

Age appropriate immunizations

732-274-1274

Same day, weekend & evening appointments available

Same day, weekend & evening appointments available

Most Insurances accepted

Hospital affiliations: JFK, RWJ and Somerset Medical Center

New Patients welcome

Management of all medical conditions including but not limited to Diabetes, Hypertension, Asthma, Allergies, Arthritis and Thyroid Disorder.

माँ सरस्वती का वरदान

वागीशा शर्मा

वागीशा शर्मा, इंदौर (११ वर्ष) पर जैसे साक्षात् माँ सरस्वती की कृपा बरसती है। मात्र ४ वर्ष की उम्र से वागीशा शर्मा ने विभिन्न मंचों पर अपने व्याख्यानों एवं हास्य कविताओं की प्रस्तुतियों का जो अनवरत सिलसिला शुरू किया, वह आज तक कायम है। संस्कृत, उर्दू, अंगरेजी के शब्दों, मुहावरों एवं काव्यांशों को हिंदी भाषा के साथ पिरोकर वागीशा जब मंचों पर अपनी वाणी कला की प्रस्तुति देती है तो हज़ारों-हज़ार मंत्रमुग्ध श्रोतागण तालियाँ बजाने पर विवश हो जाते हैं।

अपनी जबरदस्त याददाश्त तथा आत्मविश्वास से के साथ अभी तक वागीशा ने रामायण, गीता, गुरुपूर्णिमा, भारत का स्वतंत्रता दिवस, भारतीय गणतंत्र दिवस, शिक्षक दिवस, हिंदी दिवस, वीर सावरकर, जयति जय हिंदी जैसे विषयों पर व्याख्यान देकर हज़ारों लोगों को अचंभित कर दिया है। "बेटियाँ" तथा "माँ" शीर्षक की कविताओं ने वागीशा को बड़ी शोहरत दिलवाई है। भारतवर्ष के कई शहरों में वागीशा के सफलतम "वाणी शो" हो चुके हैं। टी.वी. चैनलों पर भी दर्जनों कार्यक्रमों का प्रसारण हो चुका है। हास्य व्यंग कविताएँ सुनाने में अद्‌वितीय वागीशा ने अभी तक की सारी परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी प्रावीण्य सूची के साथ उत्तीर्ण कर अपनी स्कूल के कक्षा प्रतिनिधि होने का गौरव हासिल किया है। प्रेस क्लब इंदौर ने उच्च शिक्षा मंत्री के द्‌वारा वागीशा को पुरस्कृत व सम्मानित किया है।

हिन्दी

भारत माँ के मस्तक की प्यारी - न्यारी बिंदी
भाषाओँ में श्रेष्ठ है जन गन मन की हिंदी|
आजादी की जंग में एकता का राग बनी,
मीरा की कृष्ण भक्ति में, मस्ती का पावन फाग बनी|
तुलसी की चौपाई बन, राम नाम को अमर किया,
झांसी रानी ने धारण कर, क्या खूब यहाँ पर समर किया|
गाँधी के सपनों की मूरत, लोकमान्य की आशा है,
हिंदी पर भारती गर्व करें, सन्तों मुनियों की भाषा है|
विज्ञान ज्ञान की यह दस्तक, लिपियों में सिरमौर हैं,
जब दुनिया थी अंधेरों में, तब से हिंदी जग भोर है|
सूफी, रहीम की ये बानी, सूर कबीर की पूजा है,
हिंदी, हिन्दुस्तान की धड़कन इस सा ना कोई दूजा है|

ऋषभ राउत

ऋषभ ७ वर्ष के हैं और एडीसन हिंदी पाठशाला में प्रथमा-२ स्तर में पढ़ते हैं| ऋषभ को किताबें पढ़ना और चित्र बनाना पसंद है|

ऋषभ को रामायण के लिए प्रेम उस समय हुआ, जब २००९ की दीवाली में उन्होंने रामायण के बारे में एक नाटक में भाग लिया|

नीचे प्रस्तुत है ऋषभ की चित्रकला को दर्शाता हुआ रामायण का एक महत्वपूर्ण घटना

सीता हरण

रामायण ने विश्व को सिखा दिया

आस्था सैनी

मैं दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे अपनी भारतीय सभ्यता और संस्कृति बहुत पसन्द है। मुझे गर्व है कि मैं भारतीय हूँ। ***- आस्था***

'रामायण' की रचना आदि कवि महर्षि बाल्मीकि जी ने के थी। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण को 'रामचरितमानस' के नाम से लिखा।

रामायण हिन्दुओं का पवित्र ग्रन्थ है, जिससे हमें अनेक शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं। रामायण के सभी पात्र हमें अद्भुत शिक्षाएँ देते हैं। इसी कारण आज रामायण दुनिया के सभी देशों और धर्मों के मानने वालों के गले का हार बना हुआ है। दूरदर्शन पर आने वाले रामायण सीरियल ने दुनिया के सभी देशों में एक धमाल मचा दी है। इसी कारण सभी को भारत की संस्कृति की पहचान हो गयी है। रामायण के विभिन्न पात्रों से हमे शिक्षा मिलती है। वे पात्र हैं :- श्री राम, रावण, केवट, विभीषण, जटायु, शबरी, सुग्रीव और पवनपुत्र हनुमान।

सबसे पहले सब गुणों के केन्द्र भगवान राम आते हैं, जिनको मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहा जाता है। श्री राम एक श्रेष्ठ पुत्र, आदर्श पति, सच्चे भाई और प्रजा-वत्सल थे। उनका एक-एक गुण अपने आप में एक आदर्श है।

रावण से हमको यह शिक्षा मिलती है कि परनारी को बुरी दृष्टि से कभी नहीं देखना चाहिए क्योंकि इसका परिणाम बुरा ही होता है। रावण सीता माँ का हरण न करता तो न लंका का दहन होता और न रावण का वध। बुरे कार्य का परिणाम भी बुरा ही होता है। वैसे रावण शिव जी का भक्त था, बहुत बड़ा विद्धवान था। उसे कोई नहीं मार सकता था, लेकिन उसके बुरे कार्यों के कारण उसकी मृत्यु हुई।

केवट एक मल्लाह था। लोगों को नाव से नदी पार करा कर वह अपने परिवार का पेट पालता था। श्री राम ने सीता माँ और लक्ष्मण के साथ जब नाव में बैठ कर सरयू नदी पार करनी चाही तो केवट ने मना कर दिया। उसे लगता था कि उसकी नाव भी पत्थर की अहिल्या की तरह नभ में उड़ जाएगी। इसलिए उसने बड़ी चतुराई से श्री राम के पैर धोकर पुण्य भी प्राप्त कर लिया और अपने राम की सेवा भी कर ली। श्री राम का चरणामृत पीकर मोक्ष प्राप्त कर लिया। हमें शिक्षा मिलती है कि अपने कार्य का सम्मान करने वाले का कल्याण निश्चित है।

रामायण ने विश्व को सिखा दिया

विभीषण रावण का अनुज था। रावण ने उनका अपमान किया और लंका से बाहर निकाल दिया था। उन्होंने श्री राम की शरण ली, राम को अपना देव माना, राम की भक्ति में लीन हो गए और अंत में युद्ध के समय श्री राम की सहायता की तथा रावण के बाद लंका का राज्य भी प्राप्त किया। विभीषण के चरित्र से हमें यह शिक्षा मिलती है कि दुष्ट को दंड दिलवाने में हमें सदा प्रयास करने चाहिए, चाहे वह भाई ही क्यों न हो, तथा अंत तक धैर्य रखना चाहिए क्योंकि सब्र का फल मीठा होता है।

जटायु से हमें भगवान की भक्ति का संदेश मिलता है। जटायु ने माता सीता को बचाने की कोशिश की, परन्तु रावण ने उसके पंख काट कर उसे अधमरा कर दिया। परन्तु श्री राम के दर्शन करने के बाद ही उसके प्राण निकले। इससे यह भी संदेश मिलता है कि बिना स्वार्थ के जितना संभव हो सके दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

शबरी एक भीलनी थी। वह श्री राम के आने की प्रतिदिन प्रतीक्षा करती थी। उनके रस्ते में झाड़ू लगाती और फूल बिछाती थी। श्री राम आए तो चख-चख कर उनको बेर खिलाए। इससे भीलनी के श्री राम के प्रति भक्ति और प्रेम का पता लगता है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि भक्ति और विश्वास में बड़ा बल होता है।

सुग्रीव किष्किंधा के राजा बने। श्री राम के मित्र बन कर उन्हें भक्ति भाव का फल मिला, श्री राम को सीता माँ का पता लगाने में सहायता की तथा हनुमान जी को प्रेरणा दी जिससे रावण का वध करने में सफलता मिली। इससे यह शिक्षा मिलती है कि सच्चे मित्र बने रहना अपने आप में गौरव शाली होता है।

हनुमान जी रामायण का एक प्रमुख पात्र है। वे श्री राम के भक्त थे और पवन पुत्र के नाम से भी जाने जाता थे। श्री राम की सेवा में उन्होंने सारा जीवन लगा दिया। सीता माँ का पता लगाया और रावण को श्री राम के बल व पराक्रम से परिचित कराया, जिससे श्री राम युद्ध में विजयी रहे। इसलिए हनुमान के चरित्र से हमें सेवा, भक्ति और निःस्वार्थ भाव से सेवा व उसके मधुर फल का संदेश मिलता है।

अंत में हम कह सकते हैं कि रामायण आदर्शों व शिक्षाओं का ग्रन्थ है जिसके कारण सभी देशों में उसको आदर की दृष्टि से देखा जाता है। हमें गर्व होना चाहिए क्योंकि रामायण सभी देशों में अपने स्वर्णिम संदेशों के लिए विख्यात है।

रामायण से मिले आदर्श

उर्वी सैनी

मैं आठवीं कक्षा की छात्रा हूँ। रामायण मेरा आदर्श ग्रन्थ है। मैं अपने जीवन में इसके उद्देश्यों का पालन करती हूँ। - *उर्वी*

रामायण महर्षि बाल्मीकि जी ने लिखी। यह हिन्दू धर्म की पवित्र पुस्तक है। इसमें कवि ने बुराई पर सच्चाई की जीत दिखाई है। रावण ने सीता माँ को हर लिया जिस कारण से लंका को राम दूत हनुमान ने जला डाला और राम के हाथों रावण मारा गया।

रामायण आदर्शों का महान ग्रन्थ है। दुनिया का कोई भी आदर्श ऐसा नहीं जो रामायण में न हो। जैसे राजा का प्रजा के प्रति, पिता का पुत्र के प्रति, पुत्र का पिता के प्रति, भाई का भाई के प्रति, भगवान का भक्त के प्रति, देवर का भाभी के प्रति, क्या और कैसे व्यवहार होना चाहिये ये सभी का वर्णन रामायण में किया गया है।

राजा का प्रजा के प्रति कर्तव्य

राम एक आदर्श राजा थे| उनको उनकी प्रजा बहुत प्यार करती थी। उनको भगवान के रूप में मानते थे। राम को कोई स्वार्थ नहीं था। इसलिये उन्होंने भरत के लिये राजगद्दी छोड़ दी और वनवास ले लिया।

पिता पुत्र का संबंध

रामायण ने यह उपदेश दिया कि पिता पुत्र का सबंध आदर्श होना चाहिये। राम ने पिता की आज्ञा मानकर भरत के लिय राज्य छोड़ दिया। भरत के बार-बार कहने पर भी वे वापस अयोध्या नहीं लौटे। इस प्रकार राम, भरत, शत्रुध्न और लक्ष्मण सभी आदर्श पुत्रों के रूप में दिखाये गये हैं।

रामायण में भाई के प्रति भाई का आदर्श प्यार दिखाया गया है। राम अपने छोटे भाइयों से बेहद प्यार करते थे। भरत के लिये राज्य त्याग दिया और वन वास ले लिया। छोटे भाई भी राम को भगवान मानकर अपने को धन्य मानते थे।

रामायण में यह आदर्श प्रस्तुत किया गया है कि भगवान भक्तों की सदा रक्षा करते हैं। भक्त लोग भगवान राम की सेवा करके अपने को धन्य मानते थे। भक्ति का यह आदर्श रामायण का प्राण है।

इसी प्रकार देवर भाभी का पवित्र संबंध दिखाया गया है जो अपने आप में एक आदर्श है। सीता, लक्ष्मण भरत, शत्रुघ्न छोटे भाईयों को पुत्र के समान मानती थी और देवर सीता को माता कहकर पुकारते थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रामायण से हमें अनेक शिक्षाएँ मिलती हैं। व्यक्ति और समाज का कोई भी आदर्श ऐसा नहीं है जो रामायण में न हो।

मीनू गुप्ता

नॉर्थ पोटोमैक मेरीलैंड हिन्दी पाठशाला

मेरा अनुभव

प्यारे पाठकों,

मेरा नाम मीनू गुप्ता है और मैं नॉर्थ पोटोमैक मेरीलैंड हिन्दी पाठशाला की अध्यापिका हूँ। मैं रुड़की, उत्तर प्रदेश में पली और बढ़ी तथा और मैंने आई.आई.टी. से इंजीनियरिंग की। मेरा बेटा सात वर्ष का और बेटी १० वर्ष की है। आजकल मैं एक बायोटैक्नोलोजी कम्पनी में काम कर रही हूँ।

अपनी संस्कृति से जुड़े रहने के लिए जहाँ धर्म, भोजन व वेशभूषा आवश्यक हैं वहीं भाषा का भी एक बहुत बड़ा योगदान है। हिन्दी भाषा जहाँ एक ओर वैज्ञानिक है वहीं दूसरी ओर बहुत मधुर भी है। मेरा सोचना है कि बच्चों को हिन्दी बोलने के साथ-साथ लिखना और पढ़ना भी आना चाहिए। मैंने अपने बच्चों की जब वे ३-४ वर्ष के थे, तब से ही घर पर हिन्दी सिखाना आरम्भ कर दिया था। उस समय हम न्यूजर्सी में रहते थे। उसी दौरान मेरी जान-पहचान श्रीमति रचिता सिंह व हिन्दी यू.एस.ए. के कुछ सदस्यों से हुई। वहीं से ही मुझे प्रेरणा मिली कि अपने बच्चों के साथ-साथ और बच्चों को भी हिन्दी सिखाने का प्रयास किया जाए।

लगभग ४-५ महीने पहले मैंने यहाँ पर हिन्दी पढ़ाना आरम्भ किया। अब तक का मेरा यह अनुभव है कि जो बच्चे हिन्दी सीखने आ रहे हैं, उन्हें हिन्दी कक्षा के लिए आने में बहुत अच्छा लगता है, क्योंकि कक्षा में पढ़ाई के साथ-साथ मनोरंजन के लिए वे हिन्दी की कविता या गाना सीखते हैं और खेल खेलते हैं।

बच्चों के माता-पिता व परिवारजन तो चाहते ही हैं कि उनके बच्चों को हिन्दी पढ़ना, लिखना और बोलना आए। साथ ही उन्हें प्रोत्साहन की भी आवश्यकता है। मैं बच्चों के माता-पिता को यह प्रोत्साहन देती हूँ कि उनके प्रयासों और लगन से उनके बच्चे हिन्दी अवश्य सीख जाएँगे। हिन्दी यू.एस.ए. के पाठ्यक्रम व पुस्तकों को भी कई लोगों ने सराहा है।

आगे के लिए आशा करती हूँ कि आसपास के और बच्चे भी हिन्दी सीखने के लिए प्रेरित होंगे। साथ ही हिन्दी यू.एस.ए. के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं ने अब तक जो सहयोग प्रदान किया है, मैं उसकी आभारी हूँ।

एक विद्यार्थी से स्वयं-सेवक बनने की प्रेरणा

मेरी कोनराड, वर्ष २००९-२०१० की एडिसन हिंदी वयस्क कक्षा की एक प्रतिभावान छात्रा रही हैं तथा स्नातक भी हुई हैं| अत्यंत लग्नशील, समर्पित एवं कर्मठ छात्रा थीं| भारतीय संस्कृति, भाषा एवं संस्कारों से अत्यंत प्रभावित हैं| पिछले वर्ष की हिंदी कक्षाओं में शत-प्रतिशत उपस्थिति का एक कीर्तिमान स्थापित किया है| हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यों से प्रभावित होकर इन्होने इस संस्था की सेवा एक स्वयं सेवक के रूप में करने का वचन दिया है, तथा एडिसन हिन्दी पाठशाला के बहुत से कार्यों की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है एवं उसे दक्षता से कर रही हैं| मेरी के कुछ संस्मरण एवं व्यक्तिगत विचार जो वह सभी पाठकों तक पहुँचाना चाहती हैं, प्रस्तुत है उन्हीं के शब्दों में:

मेरा नाम मेरी कॉनरोड है| एडिसन हिन्दी पाठशाला द्वारा वयस्कों हेतु आयोजित कक्षा की छात्रा रही एवं जून २०१० में स्नातक हुई | कर्मभूमि के पिछले अंक में भी मैंने अपने संस्मरण लिखे थे| इस अंक के लिए भी राज मित्तल जी ने जब मुझसे लिखने का आग्रह किया तो मेरी ख़ुशी का कोई परोवार नहीं रहा और मैं इसके लिए अपने आप को बहुत ही सम्मानित महसूस करती हूँ| हिन्दी पढ़ने का मेरा यह अनुभव बहुत ही सुन्दर रहा तथा मेरे जीवन का यह एक यादगार समय है| बहुत सी यादें एवं संस्मरण इससे जुड़ गए हैं जो मुझे हमेशा याद रहेंगे|

मई १, २०१० में संपन्न हुए विराट हिन्दी महोत्सव में अपनी कक्षा के साथ सामूहिक गान में मैंने भाग लिया और 'ओ पालनहारे' गीत को गाया| यह एक अत्यंत रोमांचकारी अनुभव था| सामूहिक गान के उपरांत मैं अन्य कार्यक्रम देखने एवं भारतीय पारंपरिक भोजन का आनंद लेने के लिए रुकी| खाने के दौरान बहुत से व्यक्तियों ने मेरे गाने एवं अभिनय की प्रशंसा की जो की मेरे लिए बहुत ही प्रसन्नता की बात थी| एक विदेशी भाषा के गीत को गाना तथा उसके साथ अभिनय करना दोनों ही एक साथ, एक चुनौती भरा कार्य था जिसे सफलता पूर्वक करके मुझे असीम प्रसन्नता का आभास हुआ| इसका पूर्वाभ्यास मैं लगभग ३ महीने से कर रही थी और इसे सफल बनाने के लिए अपना हृदय एवं आत्मा पूर्ण रूप से इसमें समाहित कर दिए थे| इस अभिनय में पहिनने के लिए मैंने नीले एवं गुलाबी रंग की सुन्दर शलवार-कमीज़ चुनी थी| सभी दर्शकों ने हमारा अभिनय बहुत सराहा| इससे हृदय में मुझे अपार प्रसन्नता का आभास हुआ| सभी हिन्दी यू.एस.ए. के आयोजकों एवं कार्यकर्ताओं को इतने सुन्दर एवं चिरस्मरणीय आयोजन हेतु अतिशय धन्यवाद|

एक विद्यार्थी से स्वयं-सेवक बनने की प्रेरणा

इस वर्ष १४ मई, २०१० को रोटरी फाउंडेशन समूह के "स्टडी एक्सचेंज" कार्यक्रम के अंतर्गत भारत से पाँच सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल अमेरिकी दौरे पर आया था| उन्होंने एडिसन हिंदी पाठशाला का भी दौरा किया| एडिसन की वयस्क कक्षा का दौरा उन्होंने बहुत ध्यान से किया तथा मुझसे मेरे हिन्दी पठन के बारे में बहुत से प्रश्न पूछे| इस देश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का इतना भव्य एवं अनूठा प्रयास देखकर उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हुई तथा हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ताओं एवं अध्यापकों को उनके इस समर्पित कार्य के लिए बहुत बधाईयाँ दीं| यह देखकर तो वह आश्चर्यचकित रह गए कि गैर-भारतियों को भी हिन्दी सीखने की कितनी उत्कट लालसा यहाँ है| मुझे यह देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई|

रोटरी फाउंडेशन समूह के प्रतिनिधियों का एडीसन हिन्दी वयस्क कक्षा का दौरा

एडिसन हिन्दी पाठशाला कि मैं ही मात्र एक छात्र थी जिसने की सत्र २००९-२०१० कक्षा में शत - प्रतिशत उपस्थिति का एक कीर्तिमान कायम किया था| मुझे अपनी इस सफलता पर गर्व है| मुझे आशा है कि समस्त विद्यार्थी इससे एक सीख लेंगे क्योंकि हिन्दी को सुचारू रूप से सीखने के लिए कक्षा में नियमितता का पालन एवं पूर्ण-उपस्थिति अत्यंत आवश्यक है| हिन्दी पढ़ने का जो मधुर अनुभव एवं आनंद मुझे इस पाठशाला में प्राप्त हुआ, इससे मुझे बहुत प्रेरणा मिली तथा अपने हिन्दी के ज्ञान की उतरोत्तर वृद्धि तथा भारतीय संस्कृति, संस्कारों को ज्यादा गहराई से समझने के दृष्टिकोण से मुझे प्रेरणा मिली कि क्यों न मैं भी इस संस्था की एक स्वयंसेविका बनकर हिन्दी के प्रचार- प्रसार हेतु इस समर्पित संस्था के साथ कार्य करूँ| मुझे इस पर बहुत गर्व है कि मैं अब एडिसन हिन्दी पाठशाला की एक समर्थ कार्यकर्ता हूँ| अगस्त ८, २०१० को कुछ व्यक्तियों के एक समूह के साथ मुझे फ्लशिंग, न्यू योर्क में आयोजित हिन्दू संगठन दिवस में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त हुआ| वहाँ बहुत से विद्वान वक्ता भारत एवं अन्य प्रान्तों से आये थे जिनके भाषणों एवं विचारों ने मुझे बहुत प्रभावित किया| यह भी एक अविस्मरणीय आयोजन था|

अंत में हिन्दी यू.एस.ए.के सभी अध्यापकों, कार्यकर्ताओं एवं अभिभावकों को मैं हृदय से धन्यवाद देना चाहूंगी कि इनके समर्पण, लग्न, एवं निष्ठा से ही आज यह संस्था इतनी ऊँची उठ पाई है| एक कार्यकर्ता के रूप में अपने आपको देखकर मुझे गर्व होता है| मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे यह श्रेष्ठ कार्य करने का अवसर मिला| मैं तन-मन से इसके सभी कार्यों हेतु कार्यशील रहूँगी यह मेरा संकल्प है |

धन्यवाद !!!!

चटपट बनाओ झटपट खाओ

रचिता सिंह

श्रावन के महीने से ही मानो त्योहारों की धूम मच जाती है, और त्योहारों के साथ-साथ रंग-बिरंगी मिठाइयों की बहार आ जाती है| अभी-अभी नागपंचमी, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी आदि त्योहार आकर गए, और अब दशहरा एवं दीपावली आने वाले हैं|

पूजा में जो मिठाई प्रसाद के रूप में चढ़ाई जाती है, यदि वह घर की बनी हो तो पूजा का मूल्य बढ़ जाता है| ऐसा इसलिए क्योंकि घर की बनी मिठाई में शुद्धता के साथ-साथ आपके ईश्वर के प्रति समर्पण के भाव भी सम्मिलित होते हैं, और आपकी मिठाई की मिठास सीधे ईश्वर तक पहुँचती है| शायद आप घबरा गई होंगी कि यहाँ तो वैसे ही इतना काम होता है, फिर दिवाली पर तो और भी व्यस्त हो जाते हैं| ऐसे में मिठाई का काम कौन बढ़ाएगा? घबराइए नहीं, मैं आपको कम मेहनत और कम समय में बनने वाली कुछ पौष्टिक मिठाइयों की कुछ विधियाँ बताती हूँ, जिन्हें आप इस दिवाली पर बना सकती हैं|

१. मथुरा के पेड़े - समय - ३० मिनिट, मात्रा - ३५ से ४० पेड़े

आवश्यक सामग्री - १२.८ औंस का नीडो दूध का पाउडर (१ डिब्बा, शक्कर - १.५ कप, घी - २ बड़े चम्मच, इलाइची पिसी हुई - ४

जिस तरह पंजीरी का आटा भूँजते हैं उसी तरह बड़ी कढ़ाही में १ बड़ा चम्मच घी का डालें, तथा इस पिघले हुए घी में दूध का पाउडर डाल दें| अब इसे धीमी आँच में १५ से २० मिनिट तक लगातार गहरा भूरा रंग आने तक भूँजती रहें| भुँजे हुए पाउडर को एक बड़े बर्तन में निकालकर ठंडा होने दें| १५ से २० मिनिट बाद इसमें शक्कर और इलाइची मिलाकर सममिश्रण बना लें, तथा एक बड़ा चम्मच पिघला हुआ घी भी डाल दें| (यदि आप घी न डालना चाहें तो थोड़ा सा दूध या पानी भी डाल सकती है, पर ऐसा करने से पेड़ों के स्वाद पर असर पड़ेगा, और साथ ही इन्हें फ्रिज में रखना पड़ेगा, अन्यथा इनके खराब होने का डर रहेगा)

जब मिश्रण बंधने लायक हो जाए (लड्डू जैसा) तो अपनी इच्छानुसार इन्हें पेड़े का आकार दे दें| एक कटोरी में थोड़ी शक्कर अलग से लें, तथा उसमें पेड़े घुमा दें| अब आप इन्हें मिठाई के डिब्बे या थाली में सजा सकती हैं| (यह मिठाई कैल्शियम की धनी है, अत: बच्चों के लिए लाभकारी है)

चटपट बनाओ झटपट खाओ

रचिता सिंह

२. बादाम का हलवा और बर्फी - समय - २० मिनिट, मात्रा - १० से १५ लोगों के लिए

आवश्यक सामग्री - दूध - ४ कप (४% वाला), बादाम - धुले हुए छिलके सहित - २ कप, घी - १ बड़ा चम्मच, शक्कर - १/२ कप, कंडेन्स मिल्क - सान्द्र दूध - १ डिब्बा, पिसी हुई इलाइची - ४

धुले हुए बादामों को बड़े बर्तन में दूध में भिगो दें, फिर मिक्सी में दूध सहित पीस लें| कड़ाही में १ बड़ा चम्मच घी डालकर गर्म करें, तथा पिसे हुए बादाम को दूध सहित कढ़ाही में डाल दें, और आँच कम रखें| अब गाढ़े दूध को धीरे-धीरे इसमें मिलाती जाएँ और लगातार चलाती जाएँ| अब इसमें पिसी इलाइची मिला दें|

यदि आप बर्फी जमाना चाहती हैं तो कंडेंस दूध की जगह रिकोटा चीज और शक्कर डालकर इसे अधिक गाढ़ा होने तक पकाएँ, और फिर थाली में जमा दें| (यह बच्चों के लिए अत्यधिक पौष्टिक है)

३. छैना संदेश - समय - ३० मिनिट, मात्रा - २० संदेश

आवश्यक सामग्री - दूध - १/२ गैलन (२%), नीबू का रस - १ से १.५ नीबू, शक्कर - ३ बड़े चम्मच, इलाइची - २ पिसी, पिस्सा - ४ बारीक कटा, गुलाब एसेंस - २ बूँद

१/२ गैलन (२%) दूध बड़े बर्तन में गर्म करें| जब वह खूब गर्म हो जाए, पर उबाल न आए तब उसमें १ नीबू का रस छान कर डालें| यदि दूध न फटे तब और रस डालें, अन्यथा न डालें| जैसे की उबाल आए बर्तन को आग से हटा लें, तथा पनीर को पतले कपड़े से छानकर खूब सुखा लें| इस छैने में बड़े-बड़े गुठले नहीं पड़ेंगे| इसे एक बर्तन में निकालकर हाथ से थोड़ा मल लें| इसमें शक्कर और इलाइची (चाहें तो पीला रंग मिला सकती हैं) मिलाकर अच्छी तरह मल लें| अब इसे धीमी आँच पर कढ़ाही में डालकर चलाती जाएँ| जब शक्कर का पानी जल जाए और वह कढ़ाही को छोड़ दे तो उसे थाली में निकाल कर संदेश के साँचे में ढाल लें| यदि साँचा न हो तो हाथ से पेड़े बना लें, तथा पिसा हुआ पिस्ता एक ओर चिपका दें| छैना कितना पौष्टिक होता है यह तो आप जानती ही हैं! लीजिए उत्तर प्रदेश, पंजाब, और बंगाल सभी जगह की मिठाईयाँ अब आप मेहमानों को खिला सकती हैं|

रामायण प्रश्नों के उत्तर

सुधा अग्रवाल

उत्तर १: ३. गणेश जी और सरस्वती जी

उत्तर २: १. सती जी ने सीता जी का रूप धारण करके राम जी की परीक्षा ली थी।

उत्तर ३: २. श्रृंगी ऋषि

उत्तर ४: ३. चैत्र महीना नवमी तिथि

उत्तर ५: २. विश्वामित्र जी

उत्तर ६: १. हेमंत ऋतु एवं अगहन महीना

उत्तर ७: ३. सुमंत जी

उत्तर ८: १. नगर : श्रृंगवेर पुर,
भेंट हुई : निषाद राज जी से

उत्तर ९: ३. भरत जी

उत्तर १०: १. भरत जी

उत्तर ११: १. अत्रि जी की पत्नी अनुसूया जी

उत्तर १२: १. सुतीक्षण जी

उत्तर १३: ३. पंचवटी (दण्डक वन)

उत्तर १४: २. पंचवटी में

उत्तर १५: २. लक्ष्मण जी

उत्तर १६: १. गिद्धराज जटायु

उत्तर १७: १. शबरी को राम-सीता जी के दर्शन होने का

उत्तर १८: २. नवधा भक्ति

उत्तर १९: २. देवराज इन्द्र का पुत्र जयंत

उत्तर २०: ३. रिष्यमूक पर्वत पर हनुमान जी ब्राह्मण का भेष धारण कर के मिले थे।

उत्तर २१: ३. जाम्बवंत जी

उत्तर २२: १. विभीषण जी का

उत्तर २३: १. करुणानिधान

उत्तर २४: ३. मूर्ख भाई! तुम जगजननी जानकी जी को क्यों चुरा लाए।

उत्तर २५: १. रावण से

उत्तर २६: ३. कैकयी जी के भवन में

उत्तर २७: १. पक्षी राज गरुड़ जी को

उत्तर २८: २. पार्वती जी को

उत्तर २९: १. सात

उत्तर ३०: १. सुन्दर काण्ड

उत्तर ३१: १. तुलसी दास जी ने

उत्तर ३२: १. बाल्मीकि जी ने

हिन्दी यू.एस.ए. की पिकनिक - २०१०

इस वर्ष हिन्दी यू.एस.ए. ने उद्यान विहार के लिए मरसर काउंटी उद्यान को चुना। यह उद्यान बहुत ही रमणीय, शांत, स्वच्छ तथा मनमोहक था। इस उद्यान के एक ओर नौका विहार तथा दूसरी ओर बच्चों के लिए झूले और क्रीड़ा स्थल था। पेड़ की ठंडी छाँह के अतिरिक्त एक छायादार बड़ा सा छत्र स्थल था, जहाँ बैठने की भी व्यवस्था थी।

जून १९ को प्लेंसबोरो के कार्यकर्ताओं ने प्रात:काल जाकर उद्यान में एक सुंदर स्थल चुनकर "हिन्दी यू.एस.ए." का बोर्ड लगा दिया। सुबह ११ बजे से ही अनेक स्वयंसेवकों, शिक्षकों, तथा अभिभावकों के परिवार उद्यान में एकत्र होने लगे थे। सभी के हाथ खेलने, खाने आदि के सामान से भरे हुए थे। लगभग ४० परिवारों ने पिकनिक में एकत्रित होकर हिन्दी यू.एस.ए. के इस वार्षिक आयोजन में आनंद उठाया।

सुबह ११:३० बजे से २ बजे तक महिलाओं और बच्चों ने भारतीय खेलों जैसे पिट्ठू, कबड्डी, डॉज बॉल, लंगड़ी आदि खेलों का आनंद लिया। कुछ बच्चों ने ये खेल पहली बार खेले, और उन्हें नए खेल सीखने में बहुत मजा आया। इसी समय पुरुषों ने अपनी क्रिकेट टीम तैयार कर ली और दूसरी ओर क्रिकेट का खेल जम गया। खेल ऐसा जमा कि कोई खाना भी खाना नहीं चाह रहा था। बड़ी मेहनत के साथ सबको भोजन करने के लिए तैयार किया गया।

सभी महिलाएँ बड़े उत्साह से विभिन्न भारतीय व्यंजन बनाकर लाईं थीं, जिसमें मुख्य थे छोले, आलू गोभी की सब्जी, पूड़ी, पुलाव, रायता, सलाद, पापड़ आदि। भोजन के बाद चावल की खीर, रसमलाई तथा तरबूज का आनंद उठाया गया।

भोजन के पश्चात एक सभा का आयोजन हुआ जिसमें सभी सदस्यों ने अपना-अपना परिचय दिया तथा महोत्सव और परीक्षा का पुनरावलोकन किया। इस बीच बच्चों ने नौका विहार किया तथा झूलों का आनंद उठाया। संध्या ६ बजे तक पिकनिक को समाप्त कर सभी इस की मीठी यादें अपने साथ लेकर अपने-अपने घरों को गए।

हिंदी यू.एस. की पिकनिक का उद्देश्य हिंदी यू.एस.ए. के कार्यकर्ताओं को तनाव-मुक्त वातावरण में लाकर एक दूसरे के और अधिक पास आने का अवसर प्रदान करना है।

साउथ ब्रुंस्विक हिन्दी पाठशाला की पिकनिक - २०१०

रविवार ११ जुलाई को साउथ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला ने बड़े हर्षोल्लास से पिकनिक मनाई। पिकनिक वुडलोट पार्क में हुई और लगभग ७५ लोगों ने बड़े उत्साह के साथ इसमें भाग लिया। यह पाठशाला हिन्दी यू.एस.ए. की सभी पाठशालाओं में विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर दूसरी सबसे बड़ी पाठशाला है।

भाग लेने वाले परिवारों में साउथ ब्रुंस्विक हिन्दी पाठशाला के शिक्षक/शिक्षिकाएँ, पाठशाला संचालक तथा अन्य कार्यकर्ता शामिल थे। कुछ परिवारों से दादा-दादी और नाना-नानी ने भी पिकनिक में भाग ले कर पिकनिक की शोभा बड़ाई। तापमान सामान्य होने के कारण खूब खेल खेले गए। कहीं क्रिकेट तो कहीं वॉलीबाल तो कहीं फ़्रिस्बीस उड़ रहीं थी। पिकनिक में सभी ने हिन्दी महोत्सव में अपने-अपने कार्यक्रमों की चर्चा भी की तथा सदैव की भांति अगले वर्ष भी हिन्दी महोत्सव में भाग लेने के लिए अपना उत्साह प्रदर्शित किया। सभी परिवार विभिन्न प्रकार के भारतीय व अमेरिकन व्यंजन ले कर आए थे। कहीं आलू पूड़ी, कहीं छोले, जूस, केक इत्यादि। भारत के सभी शहरों का खाना हम इस पिकनिक में एक साथ खा रहे थे।

बच्चों का उत्साह तो देखने योग्य था। बच्चों ने बहुत ही मनोरंजन किया। मनोरंजन करने में बच्चों के साथ-साथ माता-पिता भी कहीं पीछे नहीं थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो हम फिर से बच्चे बन गए हैं।

पिकनिक के अंत में सब ने एक बात मानी कि यह पिकनिक बहुत ही आवश्यक थी, क्योंकि हम सभी कार्यकर्ता शुक्रवार को हिन्दी कक्षा में सप्ताह में एक बार कुछ लोगों से कुछ समय के लिए ही मिलते हैं। पिकनिक में आने से हमें एक दूसरे को सपरिवार मिलने और जानने का अवसर प्राप्त हुआ।

अंत में हम सब ने यह तय किया कि साउथ ब्रुंस्विक पाठशाला प्रत्येक वर्ष कम से कम एक पिकनिक अवश्य मनाएगी। अगली पिकनिक में हम नए कार्यकर्ताओं को भी इस पिकनिक में आमंत्रित करेंगे, ताकि और नए लोग हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ सकें। उमेश जी, शिल्पा जी, पंकज जी और प्रतीक जी के प्रयासों से पिकनिक बहुत ही सफल और यादगार रही। पिकनिक में आए सभी परिवारों को धन्यवाद व पिकनिक की सफलता की बधाई।

धन्यवाद,

घनश्याम मतरेजा

राहुल उपाध्याय

एक और दीवाली

बचपन सैलाना में गुज़रा| तब से अब तक सैलानी हूँ. सैलाना, रतलाम, मेरठ, शिमला, कलकत्ता और बनारस से शिक्षा प्राप्त कर के पिछले २४ वर्ष से अमेरिका के विभिन्न शहरों में रहते हुए आजकल सिएटल में कार्यरत| पिछले दस साल से कविताएँ लिखने का शौक पाल लिया है, जिनमें या तो एन-आर-आई की त्रासदी का वर्णन होता है या फिर जीवन की विडम्बनाओं में हास्य ढूँढने का प्रयास| शब्दों से खेलना अच्छा लगता है| कविताएँ लिखने की प्रेरणा संत कबीर के दोहों से मिली. छोटी कविता, शब्दों का खेल और बात की बात|

अब कहाँ की दीवाली और कैसी दीवाली
आएगी और जाएगी एक और दीवाली

होली का माहौल हो या दीवाली का त्यौहार
मनाया जाता है सिर्फ़ शनिवार रविवार

अब कहाँ की दीवाली और कैसी दीवाली
आएगी और जाएगी एक और दीवाली

एक ही तरह की सदा महफ़िल है सजती
निमंत्रण देने पर ही यहाँ घंटी है बजती
कर के वही बे-सर-पैर की बातें
गुज़ार दी जाती हैं वो दो-चार रातें

अब कहाँ की दीवाली और कैसी दीवाली
आएगी और जाएगी एक और दीवाली

त्यौहार-दर-त्यौहार वहीं लाल-पीले कपड़े पहने हैं जाते
वहीं घीसे-पीटे जोक्स फिर से सुनाए हैं जाते
वहीं छोले, और वहीं मटर-पनीर
वहीं गुलाब जामुन और वहीं खीर

अब कहाँ की दीवाली और कैसी दीवाली
आएगी और जाएगी एक और दीवाली

पैसे की होड़ में
आगे बढ़ने की दौड़ में
पार क्या की कुछ सरहदें
कि पार कर गए हम कई हदें

दोस्तों से बंद हुआ दुआ-सलाम
भूल गए करना बड़ो को प्रणाम
धूल खा रहा है पूजा का दीपक
रामायण के पोथे को लग गई दीमक

अब कहाँ की दीवाली और कैसी दीवाली
आएगी और जाएगी एक और दीवाली

महानगर की गोद में
ईमारतों की चकाचौंध में
हैं अपनों से दूर हम सपनों के दास
न पूनम से मतलब, न अमावस का अहसास

अब कहाँ की दीवाली और कैसी दीवाली
आएगी और जाएगी एक और दीवाली

दीवाली की यादें

दीवाली मनाए हो गया एक ज़माना
जीने का मतलब जब से हो गया कमाना

न स्कूल हैं बंद, न हैं आँफ़िस में छुट्टी
किस्मत भी देखो किस तरह है फ़ूटी
बाँस को भी था आज ही सताना

दीवाली मनाए हो गया एक ज़माना ..

न वो पूजा का मंडप, न वो फूलों की खुशबू
न वो बड़ों का आशीष, न वो अपनो की गुफ़्तगू
समां फिर ऐसा मिले तो बताना

दीवाली मनाए हो गया एक ज़माना...

वो मिठाई के डब्बे, वो दस तरह के व्यंजन
न था डाँयबिटिज़ का डर, न थे डाँयटिंग के बंधन
वो खूब खिला के अपनापन जताना

दीवाली मनाए हो गया एक ज़माना ...

वो गलियों में रंगत, वो दहलीज़ पे रंगोली
वो रंगीं पोषाकों में बच्चों की टोली
सपना सा लगता है अब वो ज़माना

दीवाली मनाए हो गया एक ज़माना ...

याद आता है वो पटाखों का शोर
बारूद में महकी वो जाड़ों की भोर
वो रात-रात भर दीपक जलाना

दीवाली मनाए हो गया एक ज़माना ...

दशहरे मेले में हिंदी यू.एस.ए के बूथ पर अवश्य पधारिए